तनवीर अंजुम

हिमालय की
भयावहता पर एक
उपन्यास

भगवा शून्य

Tanvir Anjum

A Novel on Himalayan Horrors

The Saffron Void

केसरिया शून्य

TANVIR ANJUM

यह महान कार्य समर्पित है
मेरे नाना के पवित्र हृदय
स्वर्गीय अकबर अली बिस्वास

केसरिया शून्य

प्रस्तावना: आकाश में सागर

12 अक्टूबर, 1962। भारत-चीन सीमा के निकट।

स्पीति में हवा बहती नहीं, बल्कि चीखती है। यह आपकी त्वचा से नमी और आपकी आत्मा से आशा छीन लेती है।

मेजर दिग्विजय सिंह ने हैम रेडियो की फ़्रीक्वेंसी समायोजित की, भारी ऊनी दस्तानों के बावजूद उनकी उंगलियां सुन्न हो गई थीं। बंकर छह फीट बर्फ के नीचे दबा हुआ था, केवल मिट्टी के तेल के हीटर की टिमटिमाती नारंगी रोशनी से जगमगा रहा था। हवा में अनधुले शरीरों, ओजोन और भय की गंध फैली हुई थी।

“क्या यह कैलिब्रेटेड है?” डॉ. अय्यर ने पूछा। वैज्ञानिक बुरी तरह कांप रहा था, कोने में दुबका हुआ था और चमड़े की नोटबुक पकड़े हुए था। “मेजर, अगर आवृत्ति एक दशमलव से भी गलत हो जाती है... तो हम सिर्फ उनके संचार को ही नहीं रोकते। हम कुछ और भी रोकते हैं।”

"बस कर दो, अय्यर," दिग्विजय गुर्राया। "कमांड जानना चाहती है कि चीनी सैनिक दर्रे के पार क्या कर रहे हैं। उनका कहना है कि उन्हें भिनभिनाहट सुनाई दे रही है।"

जब अय्यर ने रिसीवर के भारी लोहे के डायल को घुमाया तो उनके हाथ कांप रहे थे - यह वैक्यूम ट्यूबों और तांबे के कॉइल से बनी एक विशाल, विशेष रूप से निर्मित मशीन थी जिसने बंकर का आधा हिस्सा घेर रखा था।

हम्मम।

आवाज धीमी गति से शुरू हुई। यह रेडियो सिग्नल नहीं था। यह कंपन था। मेज पर रखे धातु के कप में चाय में लहरें उठने लगीं। इन लहरों ने एकदम सटीक ज्यामितीय आकृतियाँ बनाईं —भौतिकी के मंडल।

"रुको," अय्यर ने फुसफुसाते हुए कहा। उसकी नाक से खून बहने लगा। "मेजर, बैरोमीटर देखो।"

दिग्विजय ने देखा। बैरोमीटर का शीशा टूट गया था। कमरे का दबाव तेजी से गिर रहा था।

"यह अंदर जा रहा है," अय्यर चीखा, उसकी आवाज़ पतली और उन्मादी थी। "केसरिया शून्य! यह कोई रूपक नहीं है, मेजर! यह एक दरवाज़ा है!"

"इसे बंद करो!" दिग्विजय बिजली के तार की ओर झपटा।

लेकिन आवाज़ बदल गई। अब वह हल्की गुनगुनाहट नहीं थी। वह लहरों के टकराने की आवाज़ थी। एक उग्र महासागर की गर्जना।

समुद्र तल से 4,000 मीटर ऊपर स्थित एक कंक्रीट के बंकर में, कमरा खारे पानी और समुद्री शैवाल की गंध से भर गया था।

दिग्विजय जम गया। वह स्तब्ध होकर देखता रहा, मानो डॉ. अय्यर तैरने लगे हों। हवा में तैरना नहीं, बल्कि पानी में लटके हुए तैरना। अय्यर के बाल ऊपर की ओर उठने लगे। उनका मुंह एक खामोश चीख में खुल गया, उनके होठों से हवा के बुलबुले निकल रहे थे, मानो वे हिमालय की पतली, शुष्क हवा में डूब रहे हों।

फिर रेडियो ट्यूब फट गए।

अध्याय 1: दंडात्मक पोस्टिंग

आज का दिन। काज़ा, स्पीति घाटी।

डीसीपी कबीर सेन दुनिया के छोर पर खड़े थे, और उन्हें सिगरेट पीने की इच्छा हो रही थी। उसने अपने मोटे जैकेट की जेबें टटोलीं, तो उसे केवल एक मुड़ी हुई रसीद और एक लाइटर मिला जो इतना ठंडा था कि चिंगारी भी नहीं निकल रही थी। उसने मन ही मन बड़बड़ाया और अपने शब्दों को सफेद भाप के गुबार में बदलते देखा, जो ठंडी हवा में पल भर में उड़ गए।

उसके नीचे, स्पीति नदी जमी हुई धूसर कीचड़ की एक पतली धारा की तरह घाटी से होकर बह रही थी। परिदृश्य विचित्र था—बर्फ से ढके बंजर भूरे पहाड़, प्रागैतिहासिक जानवरों के दांतों जैसी दिखने वाली नुकीली चट्टानें, और इतना नीला आकाश कि आँखों में चुभन हो रही थी।

यह खूबसूरत था। यह वीरान था। यह एक जेल थी।

"महोदय?"

कबीर मुड़ा। सब-इंस्पेक्टर नेगी पुलिस जीप के पास खड़ा था, अधीरता से देख रहा था। नेगी स्थानीय निवासी था—छोटा कद, गठीला शरीर, और ऊँचाई वाले पहाड़ों की धूप से उसके गाल लाल हो गए थे। उसने कबीर को उस खास तिरस्कार भरी नज़र से देखा जो स्थानीय लोग उन "मैदानी लोगों" के लिए रखते थे जो पहाड़ों पर आकर ऑक्सीजन की कमी सहन नहीं कर पाते थे।

"महामारी विशेषज्ञ इंतज़ार कर रहे हैं, महोदय," नेगी ने कहा। "शव पिघल रहा है।"

"चलो चलते हैं," कबीर ने जीप में चढ़ते हुए कहा।

काज़ा की गड्ढों से भरी सड़कों पर गाड़ी उछलती-कूदती हुई चरमरा रही थी। यह ज़िला मुख्यालय था, लेकिन देखने में किसी चंद्र चौकी जैसा लग रहा था। सपाट छतों वाले मिट्टी की ईंटों के मकान, हवा में ज़ोर से लहराते प्रार्थना झंडे और दूर एक शंकु के आकार की पहाड़ी पर स्थित विशाल क्ये मठ।

कबीर यहाँ तीन सप्ताह से था। दिल्ली में हुए हंगामे के बाद उसका "अनुशासनात्मक तबादला" कर दिया गया था। रिपोर्ट में कहा गया था कि उसने अत्यधिक बल का प्रयोग किया था। आंतरिक समीक्षा में दबी आवाज़ में कहा गया था कि वह मानसिक रूप से अस्थिर है।

इसलिए उसे मानचित्र के सबसे शांत स्थान पर भेज दिया गया, इस उम्मीद में कि सन्नाटा या तो उसे सुधार देगा या उसे खत्म कर देगा।
"क्या आपने फाइल देखी है, महोदय?" नेगी ने स्टीयरिंग व्हील को संभालते हुए पूछा।
कबीर ने कहा, "मैंने पढ़ा। अनन्या गुप्ता। 24 साल की। मंत्री गुप्ता की बेटी। पर्यटक। दो दिन पहले धनकर की ट्रेकिंग के दौरान लापता हो गई।"
नेगी ने कहा, "आज सुबह चरवाहों ने इसे खोजा। पाइन घाटी के दर्रे के पास एक गुफा में।"
"हाइपोथर्मिया?"
नेगी ने तुरंत जवाब नहीं दिया। उसने गियर बदला, जीप विरोध में कर्कश आवाज करने लगी।
"आपको खुद ही देख लेना चाहिए, महोदय।"
वे एक छोटे से सरकारी अस्पताल के पास पहुँचे। वह कंक्रीट की इमारत थी जिसमें फिनाइल और गीली ऊन की गंध आ रही थी। हीटिंग सिस्टम ठीक से काम नहीं कर रहा था।
मुर्दाघर के अंदर—जो किसी मांस के फ्रीजर से अलग नहीं दिखता था—डॉ. पेमा इंतजार कर रही थीं। वह पचास वर्ष की एक गंभीर महिला थीं, जिन्होंने अपने मेडिकल ड्रेस के ऊपर एक मोटी जैकेट पहनी हुई थी।
"डीसीपी सेन," उसने सिर हिलाया। "फ्रीजर में आपका स्वागत है।"
"डॉक्टर।" कबीर धातु की मेज की ओर बढ़ा।
शव एक सफेद चादर के नीचे पड़ा था। कबीर ने चादर हटाई।
अनन्या गुप्ता कभी खूबसूरत हुआ करती थी। अब वह बर्फ की मूर्ति जैसी हो गई थी। उसकी त्वचा नीले-भूरे रंग की थी, छूने पर सख्त लगती थी। उसके बाल उलझे हुए थे और उसके सिर के चारों ओर अजीबोगरीब घुमावदार पैटर्न में जमे हुए थे।
“मृत्यु का कारण?” कबीर ने पूछा।
“यही तो दिलचस्प बात है,” डॉ. पेमा ने कहा। उन्होंने एक स्केलपेल (सर्जरी का औजार) उठाया, हालांकि उन्होंने उसका इस्तेमाल नहीं किया। “उनके फेफड़ों को देखिए, डीसीपी। या यूं कहें कि एक्स-रे देखिए।”
उसने लाइट बॉक्स पर एक फिल्म लगाई।

कबीर ने कहा, "उसके फेफड़ों में पानी भर गया है। फेफड़ों में सूजन? ऊंचाई पर होने वाली बीमारी?"
"मुझे भी यही लगा था," डॉ. पेमा ने कहा। "यहाँ हाई एल्टीट्यूड पल्मोनरी एडिमा (HAPE) आम है। फेफड़ों में तरल पदार्थ भर जाता है, मरीज अपने ही प्लाज्मा में डूब जाता है। लेकिन ज़रा गौर से देखिए।"
कबीर ने आंखें सिकोड़ीं।
"मैंने तरल पदार्थ का एक नमूना निकाला," डॉ. पेमा ने एक छोटी ट्रे की ओर चलते हुए कहा। उन्होंने एक टेस्ट ट्यूब ऊपर उठाई। उसके अंदर का तरल पदार्थ धुंधला था।
उन्होंने आगे कहा, "मैंने एक रासायनिक विश्लेषण किया। यह प्लाज्मा नहीं है। यह पानी है। विशेष रूप से, 3.5% लवणता वाला पानी।"
कबीर ने उसकी ओर देखा। "खारा पानी?"
"समुद्री जल, डीसीपी सेन," डॉ. पेमा ने कहा, उनकी आवाज़ में हास्य का कोई भाव नहीं था। "और फेफड़ों के अंदर? मुझे डायटोम के निशान मिले। सूक्ष्म शैवाल।"
कबीर ने तर्क दिया, "डायटोम नदियों में पाए जाते हैं।"
“ये वाले नहीं,” डॉ. पेमा ने सिर हिलाते हुए कहा। “ये स्केलेटोनेमा कोस्टैटम हैं। समुद्री प्लवक। हिंद महासागर में पाए जाते हैं।”
कमरा एकदम शांत हो गया। बाहर से आती तेज हवा की आवाज के अलावा खिड़की के शीशे के हिलने की कोई आवाज नहीं थी।
कबीर ने धीरे से कहा, "तुम मुझसे कह रहे हो कि एक महिला हिमालय में माइनस बीस डिग्री तापमान वाले पहाड़ पर चढ़ी और किसी तरह समुद्र में डूब गई?"
"मैं आपको तथ्य बता रहा हूं, डीसीपी। मैं सिद्धांतों की बात नहीं करता।"
कबीर ने शव की ओर देखा। उसने लड़की के चेहरे को देखा। उसके चेहरे पर शांति का भाव नहीं था। डर के मारे उसका मुंह खुला हुआ था।
"एक और बात है," नेगी ने दरवाजे से कहा। वह असहज लग रहा था।
"क्या?"
नेगी ने इशारा करते हुए कहा, "उसके मुंह में। हमें अंदर कुछ मिला।"

डॉ. पेमा ने चिमटी का इस्तेमाल करके पीड़ित के जमे हुए जबड़े को खोला। इससे एक भयानक चटकने की आवाज आई।
मुख गुहा के भीतर, गले से सटा हुआ, एक पदार्थ था। यह रेशेदार, गहरे लाल रंग का था और इसमें हल्की सी धातु जैसी गंध आ रही थी।
कबीर को एहसास हुआ, "केसर। कच्चे केसर के धागे।"
"हजारों रुपये के बराबर," नेगी ने बुदबुदाते हुए कहा। "उसके गले में तब तक ठूंसा गया जब तक कि उसका दम नहीं घुट गया।"
कबीर ने झुककर देखा। लड़की के दांतों पर, किसी बेहद नुकीली चीज़ से, इनेमल पर छोटे-छोटे निशान खुदे हुए थे। वे न तो हिंदी थे, न ही अंग्रेज़ी।
"यह क्या है?" कबीर ने पूछा।
स्थानीय लिपि का जिक्र करते हुए नेगी ने कहा, "यह भोटी लिपि जैसी दिखती है। लेकिन... पुरानी है।"
कबीर ने आदेश दिया, "एक फोटोग्राफर लाओ," उसके निर्वासन की सुस्ती पल भर में गायब हो गई। शिकारी की प्रवृत्ति—जिसने दिल्ली में उसका करियर बर्बाद कर दिया था—जाग रही थी। "हर दांत की तस्वीर खींचो। और घाटी में केसर का व्यापार करने वाले हर व्यक्ति की सूची मुझे लाओ।"
"महोदय," नेगी हिचकिचाया। "केसर... यह व्यापारिक किस्म का नहीं है। यह जंगली केसर है। यह केवल सीमा के पास की निषिद्ध घाटियों में उगता है। स्थानीय लोग इसे छूते भी नहीं हैं।"
"क्यों नहीं?"
"वे कहते हैं कि यह प्रेतों का है," नेगी ने फुसफुसाते हुए कहा। "भूखे भूतों का। अगर तुम इसे खाओगे तो तुम खोखले हो जाओगे।"
कबीर उस जमी हुई लड़की को घूरता रहा जो एक अदृश्य सागर में डूब गई थी।
कबीर ने अपनी जैकेट के बटन लगाते हुए कहा, "नेगी, मुझे एक विशेषज्ञ चाहिए। कोई ऐसा व्यक्ति जो इतिहास, लोककथाओं और भाषा को जानता हो। कोई ऐसा व्यक्ति जो भूतों पर विश्वास न करता हो, लेकिन यह जानता हो कि दूसरे लोग क्यों करते हैं।"

नेगी ने कहा, "एक व्यक्ति है। तारा दोरजे। वह ताबो के ऊपर स्थित पुराने मठ के खंडहरों में रहती है। लेकिन उसे पुलिस पसंद नहीं है।"
कबीर ने कहा, "बिल्कुल सही। गाड़ी चलाओ।"

अध्याय 2: अस्थि पुस्तकालय

ताबो, काज़ा से 40 किलोमीटर दूर।

ताबो तक का सफर किसी सफेद नरक से होकर गुजरने जैसा था। बर्फ गिरनी शुरू हो गई थी—मोटी, भारी बर्फ की बूंदें जो विंडशील्ड पर चिपक गई थीं।

तारा दोरजे का घर कोई मकान नहीं था; वह एक किला था। प्राचीन ताबो गुफाओं के पास चट्टान के किनारे पर बना यह किला पत्थर और मिट्टी से बना था, जिसमें छोटी-छोटी खिड़कियां थीं जो तिरछी आंखों जैसी दिखती थीं।

कबीर ने भारी लकड़ी के दरवाजे पर जोर से दस्तक दी।

अंदर से एक महिला की आवाज़ आई, "चले जाओ, नेगी! मैंने तुमसे कहा था, मैं अब और किसी पर्यटक के टैटू का अनुवाद नहीं करूंगी!"

कबीर ने चिल्लाकर जवाब दिया, "यह नेगी नहीं है। डीसीपी कबीर सेन। दिल्ली पुलिस। या जो कुछ भी उसका बचा-खुचा हिस्सा है।"

सन्नाटा। फिर भारी बोल्टों के पीछे खिसकने की आवाज़।

दरवाजा चरमराते हुए खुला।

तारा दोरजे कबीर की उम्मीदों पर खरी नहीं उतरीं। कबीर को एक उम्रदराज विद्वान की उम्मीद थी। तारा लगभग तीस वर्ष की थीं, स्याही के धब्बों से सना हुआ ऊनी स्वेटर पहने, कॉम्बैट बूट्स और टेप से जुड़े चश्मे लगाए हुए थीं। उनके बाल छोटे और सादे थे। उनके पीछे कमरे की अव्यवस्थित ऊर्जा—किताबों के ढेर, दीवारों पर टंगे नक्शे, मेजों पर रखी अजीबोगरीब हड्डियों की कलाकृतियाँ—उन्हें एक अव्यवस्थित आभा की तरह घेरे हुए थी।

उसने कबीर को ऊपर से नीचे तक देखा। "आप ठंड से कांप रहे हैं, डीसीपी। अंदर आ जाइए, नहीं तो गर्मी बाहर निकल जाएगी।"

कबीर अंदर दाखिल हुआ। कमरे में जलती हुई जुनिपर की लकड़ी और पुराने कागजों की गंध आ रही थी।

कबीर ने औपचारिकताओं को दरकिनार करते हुए कहा, "मुझे आपसे एक चीज़ देखने की ज़रूरत है।" उसने अपनी जैकेट से पीड़ित के दांतों की छपी हुई तस्वीरें निकालीं।

तारा ने उन्हें ले लिया। वह अपनी डेस्क पर गई, सूखी जड़ी-बूटियों का ढेर फर्श पर गिराया और तस्वीरों को आवर्धक लेंस के नीचे रखा।
एक मिनट तक वह चुप रही। कबीर उसके हाथों को देखता रहा। उसके हाथ हल्के से कांप रहे थे।
"यह तुम्हें कहाँ मिला?" उसने धीमी आवाज़ में पूछा।
"अनन्या गुप्ता। पर्यटक आज सुबह मृत पाई गईं।"
तारा ने ऊपर देखा। उसकी आँखें काली थीं, अचानक तीव्र भय से भरी हुई थीं। "क्या वह मर गई?"
"क्या आप उसे जानते थे?"
"नहीं," तारा ने कहा। "लेकिन मुझे यह स्क्रिप्ट याद है। मैंने इसे दो दिन पहले देखा था।"
"कहाँ?"
"ग्राफिटी," तारा ने कहा। "शहर के बीचोंबीच स्थित प्रार्थना चक्र के किनारे पर पेंट किया गया है। मुझे लगा कि यह कुछ गॉथ बच्चों की शरारत है।"
"इसमें क्या लिखा है, सुश्री दोरजे?"
तारा ने दांत की तस्वीर पर टैप किया।
"यह एक ध्वन्यात्मक लिपि है। यह झांग-झुंग की एक बोली है, जो तिब्बत में बौद्ध धर्म से पहले की बोन धर्म की भाषा थी।"
"इसका अनुवाद करें।"
तारा ने गहरी सांस ली। "इसका मोटा-मोटा अनुवाद यह है: पानी का स्तर बढ़ रहा है।"
कबीर की रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। "वह डूब गई, श्रीमती दोरजे। पहाड़ों में।"
तारा का चेहरा पीला पड़ गया। वह किताबों की अलमारी की ओर बढ़ी और धूल से सनी चमड़े की जिल्द वाली एक किताब निकाली। उसने पन्ने तेज़ी से पलटने शुरू किए, जब तक कि उसे लकड़ी की नक्काशी वाला चित्र नहीं मिल गया।
इसमें फूलों से भरा हुआ, मुंह खुला हुआ एक मानव आकृति दिखाई गई थी। यह आकृति आकाश में लटके हुए पानी के एक गोले में तैर रही थी।

"केसर की रस्म," तारा ने फुसफुसाते हुए कहा। "मुझे लगा था कि यह एक मिथक है। बच्चों को डराने वाली एक मनगढ़ंत कहानी।"
"व्याख्या करना।"
तारा ने पाठ पढ़ते हुए कहा, "17 वीं शताब्दी में, 'लिसनर्स' नामक एक संप्रदाय था। उनका मानना था कि मृतकों की दुनिया और जीवितों की दुनिया केवल एक कंपन—एक आवृत्ति—से अलग होती है। उनका मानना था कि यदि आप सही ध्वनि उत्पन्न कर सकें, तो आप द्वार खोल सकते हैं।"
और केसर?
"केसर अधिक मात्रा में लेने पर शामक का काम करता है। लेकिन जंगली केसर... यह मतिभ्रम पैदा करने वाला होता है। यह मस्तिष्क की प्रतिरोधक क्षमता को कम करता है। यह आपको... ग्रहणशील बनाता है।"
"किस बात के प्रति ग्रहणशील?"
"प्रसारण की ओर," तारा ने कबीर की ओर देखते हुए कहा। "वह संप्रदाय किसी देवता की पूजा नहीं करता था। वे एक ध्वनि की पूजा करते थे। वे उसे शून्य कहते थे। किंवदंती कहती है कि उन्होंने घाटी को साफ करने के लिए दूसरी दुनिया से एक सागर को बुलाने की कोशिश की थी।"
कबीर ने अपनी कनपटी रगड़ी। "पंथ। बहुत बढ़िया। मुझे बस इसी की ज़रूरत थी।"
"यह सिर्फ एक पंथ नहीं है, डीसीपी," तारा ने कहा। वह खिड़की के पास गई और गिरती बर्फ को देखने लगी। "मौसम देखो।"
"सर्दी का मौसम है। बर्फ गिरती है।"
"ऐसा नहीं," तारा ने कहा। "एक घंटे में बैरोमीटर 40 मिलीबार गिर गया है। यह तूफान नहीं है। यह चक्रवात है। हिमालय में।"
वह उसकी ओर मुड़ गई।
"जिस किसी ने भी उस लड़की को मारा... उन्होंने उसे सिर्फ मारा ही नहीं। उन्होंने उसका इस्तेमाल किया। वह एक ट्रांसमीटर थी।"
अचानक घर की बत्तियाँ टिमटिमाकर बुझ गईं। चारों ओर घना अंधेरा छा गया।

कमरे के कोने से, तारा की पुरानी चीज़ों में से एक, एक पुराना शॉर्टवेव रेडियो अचानक चालू हो गया। यह प्लग में नहीं लगा था।

स्थिर।

फिर एक आवाज आई। गीली, गड़गड़ाती हुई, मानो मुंह में पानी भरा हो और आवाज निकल रही हो।

...कबीर...

कबीर ने अपनी सर्विस रिवॉल्वर निकाली और रेडियो की ओर मुड़ा। "यह कौन है?"

कबीर... पानी में बहुत ठंड है...

कबीर जम गया। वह उस आवाज को जानता था। यह पीड़िता अनन्या गुप्ता की आवाज नहीं थी।

वह उनकी पत्नी थीं। उनकी पत्नी जिनकी तीन साल पहले दिल्ली में मृत्यु हो गई थी।

तारा ने कबीर की ओर देखा, उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। "डीसीपी... ये कौन है?"

"इसे बंद कर दो," कबीर ने कांपते हाथों से फुसफुसाते हुए कहा।

"यह प्लग इन नहीं है!"

रेडियो की आवाज़ तेज़ हो गई, और उसमें से आने वाली कर्कश ध्वनि लहरों के टकराने जैसी लग रही थी।

...केसरिया शून्य खुल रहा है, कबीर... बुनकर जाग उठा है...

दरार।

रेडियो का बल्ब टूट गया। कमरे में सन्नाटा छा गया, जो भारी और घुटन भरा था।

कबीर अँधेरे में खड़ा था, उसकी साँसें छोटी-छोटी और तेज़ चल रही थीं। वह अपने अतीत के भूतों से बचने के लिए पहाड़ों पर आया था। लेकिन ऐसा लग रहा था कि वे भूत उससे पहले ही वहाँ पहुँच चुके हैं।

कबीर ने बड़ी मुश्किल से अपनी आवाज़ को स्थिर करते हुए कहा, "श्रीमती दोरजे, अपना कोट ले आइए।"

"हम कहाँ जा रहे हैं?"

"पुलिस स्टेशन चलो। तुम्हें पुलिस स्टेशन में नियुक्त किया गया है।"

मैं इसमें शामिल नहीं होना चाहता!

कबीर ने तेज़ हवा के सामने दरवाज़ा खोलते हुए कहा, "तुमने अभी-अभी बिना बिजली के रेडियो की आवाज़ सुनी। तुम पहले से ही इसमें फँसे हुए हो। और अगर यह तूफान वैसा ही है जैसा तुम कह रहे हो... तो हम सब इस घाटी में फँस गए हैं, उस प्रसारण के दूसरे छोर पर जो भी हो—या जो कुछ भी हो—उसके साथ।"

अध्याय 3: श्वेत अंधापन

काज़ा वापस जाने का सफर कोई आसान सफर नहीं था; यह गुरुत्वाकर्षण के साथ एक समझौता था।

बर्फीला तूफान मानो छत के ढहने के भार के साथ बरस रहा था। दृश्यता जीप के बोनट तक सिमट गई थी। उसके आगे, दुनिया सफेद रंग के एक घूमते हुए भंवर में बदल गई थी जो परिदृश्य को बेरहमी से मिटा रही थी। स्पीति नदी, जो आमतौर पर बाईं ओर हमेशा साथ रहती थी, अथाह गहराई में गायब हो गई थी।

कबीर आगे की ओर झुका, उसकी छाती स्टीयरिंग व्हील से सटी हुई थी, और उसकी आँखें सड़क के किनारे को खोजने के लिए बेताब थीं। एक गलत मोड़ का मतलब था जमी हुई खाई में तीन सौ फीट की गहरी खाई में गिरना।

"गाड़ी बाईं ओर जा रही है," तारा ने तनाव भरी आवाज़ में कहा। उसने डैशबोर्ड का हैंडल इतनी ज़ोर से पकड़ा हुआ था कि उसकी उंगलियों के जोड़ सफ़ेद पड़ गए थे।

कबीर ने कराहते हुए कहा, "मुझे निशान दिखाई नहीं दे रहे हैं। बर्फ ने सब कुछ ढक दिया है।"

"रुको," तारा ने अचानक आदेश दिया।

कबीर ने अचानक ब्रेक लगा दिए। काली बर्फ पर जीप फिसल गई और खतरनाक तरीके से इधर-उधर उछलती हुई खाई से कुछ ही इंच की दूरी पर आकर रुक गई।

"क्या बात है?" कबीर ने झल्लाकर पूछा, उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था।

"देखो," तारा ने चारों ओर छाई बर्फ की ओर इशारा किया।

कबीर ने आंखें सिकोड़ीं। पहले तो उसे कुछ नहीं दिखा। फिर बर्फ में से आकृतियां उभरने लगीं।

वे भरल भेड़ें थीं—हिमालयी नीली भेड़ें। लगभग बीस भेड़ों का झुंड था। वे सड़क के बीचोंबीच खड़ी थीं और रास्ता रोक रही थीं।

लेकिन वे हिल नहीं रहे थे। वे ठंड से बचने के लिए एक-दूसरे से चिपककर नहीं बैठे थे। वे जीप की ओर मुंह करके, सिर झुकाए, एकदम स्थिर खड़े थे।

"हॉर्न बजाओ," तारा ने फुसफुसाते हुए कहा।

कबीर ने तुरही बजाई। उसकी आवाज़ तूफ़ान के सन्नाटे में कर्कश और बेमेल सी गूंज उठी। भेड़ें जरा भी नहीं हिलीं। उनके शरीर की एक भी मांसपेशी नहीं फड़की। बकरियों और भेड़ों की खासियत वाली आयताकार पुतलियाँ, उनकी आँखें वाहन पर टिकी हुई थीं।
"यह ठीक नहीं है," तारा ने अपनी सीट बेल्ट खोलते हुए कहा। "उन्हें भागना चाहिए। भरल डरपोक होते हैं।"
उसने दरवाजा खोला।
कबीर ने आदेश दिया, "अंदर ही रहो!"
तारा ने उसे अनसुना कर दिया। वह तेज़ हवा में बाहर निकली और अपने चेहरे पर स्कार्फ़ कसकर लपेट लिया। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए उस विशालकाय नर प्राणी की ओर बढ़ी, जिसके सींग मुड़े हुए थे।
कबीर ने अपनी रिवॉल्वर उठाई और उसके पीछे-पीछे बाहर चला गया। ठंड ने उसे शारीरिक आघात की तरह जकड़ लिया, जिससे उसकी नाक की नमी पल भर में जम गई।
तारा ने जानवर की ओर हाथ बढ़ाया। "हे," उसने धीरे से कहा। "आगे बढ़ो।"
भेड़ ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।
तारा ने जानवर के पार्श्व भाग को छुआ। फिर वह हांफते हुए पीछे हट गई।
"कबीर," उसने तेज़ हवा के बीच चिल्लाकर कहा। "वे जम गए हैं!"
"क्या?"
"वे एकदम जम गए हैं! देखो!"
कबीर पास आया। जानवर सीधा खड़ा था, अपने खुरों पर पूरी तरह संतुलित, लेकिन वह पत्थर की तरह कठोर था। उसकी पलकों पर बर्फ के क्रिस्टल जम गए थे। वह मांस और फर की एक मूर्ति थी, जो चलते-चलते बीच में ही जम गई थी।
उसने झुंड के बाकी जानवरों को देखा। उन सभी को। बीस जानवर, प्रवास के दौरान पल भर में जम से गए।
“यह कैसे संभव है?” कबीर ने बर्फीली ऊन को छुआ। “इतने बड़े शरीर को जमने में घंटों लगते हैं। वे तो गिर ही गए होते।”

"जब तक कि तापमान एक पल के लिए भी परम शून्य तक न गिर जाए," तारा ने कांपती हुई आवाज में कहा। "या फिर..."

"या क्या?"

"या फिर यहाँ से कोई चीज़ गुज़री है," तारा ने चारों ओर घूमती बर्फ़ को देखते हुए कहा। "कोई ऐसी चीज़ जो हवा से गर्मी सोख लेती है। स्थानीय लोग इसे ज़ा-ग्रम कहते हैं। ठंडी परछाई।"

दरार।

उनके ऊपर पहाड़ से एक आवाज़ गूंजी। बिजली कड़कने की आवाज़ नहीं थी। यह चट्टान के टूटने जैसी आवाज़ थी।

"हिमस्खलन!" कबीर दहाड़ा।

उसने तारा को जैकेट से पकड़ा और उसे जीप की ओर धकेल दिया। वे जैसे ही अंदर घुसे, ठीक उसी समय बर्फ और पत्थरों का एक सैलाब उनके दस मीटर आगे सड़क पर आ गिरा और कुछ ही पलों में जमी हुई भेड़ों के झुंड को दफना दिया।

मलबे के बम्पर से टकराने पर जीप बुरी तरह हिल गई।

"पीछे करो!" तारा चिल्लाई।

कबीर ने गियर को रिवर्स में डाला, टायर बर्फ पर तेजी से घूमने लगे। उसने जीप को पीछे की ओर मोड़ा और बर्फ की बढ़ती दीवार से बचते हुए गाड़ी को दूसरी तरफ मोड़ दिया।

वे कुछ देर तक हांफते हुए वहीं बैठे रहे, और बढ़ती ठंड के बावजूद हीटर की तेज रफ्तार बेअसर साबित हो रही थी।

कबीर ने सामने बर्फ की दीवार को देखते हुए कहा, "ताबो जाने वाली सड़क गायब हो गई है। हम पूरब से कट गए हैं।"

"और कुंजुम दर्रा सर्दियों के लिए बंद है," तारा ने गंभीर स्वर में कहा। "हम फंस गए हैं, कबीर। घाटी पूरी तरह से बंद है।"

कबीर ने रियरव्यू मिरर में देखा। रेडियो वाली घटना। वो लड़की जिसके फेफड़ों में समुद्र समाया हुआ था। जमी हुई भेड़।

कबीर ने कहा, "हमें काज़ा पहुंचना होगा। और हमें खुद को हथियारबंद करना होगा।"

"किससे?" तारा ने पूछा। "तापमान गिरने पर बंदूकें काम नहीं करतीं।"
"नहीं," कबीर ने अपनी रिवॉल्वर जाँचते हुए कहा। "लेकिन ये उन लोगों पर असर करती हैं जो इन्हें पैदा कर रहे हैं।"

अध्याय 4: बुनकर की गाँठ

काज़ा पुलिस स्टेशन। शाम 7:00 बजे।

स्टेशन बैकअप जनरेटरों पर चल रहा था। बत्तियाँ लयबद्ध, मतली पैदा करने वाली धड़कन के साथ टिमटिमा रही थीं।

अंदर का माहौल अस्त-व्यस्त था। तूफान के कारण लैंडलाइन फोन ठप हो गए थे। सैटेलाइट फोन भी बंद था—सिर्फ़ स्टैटिक आवाज़ आ रही थी। स्थानीय लोग रिसेप्शन एरिया में जमा होकर बिजली कटौती और लापता पशुओं की शिकायत कर रहे थे।

कबीर भीड़ को चीरते हुए तारा को अपने साथ घसीटता हुआ आगे बढ़ा। वह सीधे अपने दफ्तर में घुस गया और दरवाजा जोर से बंद कर दिया। सब-इंस्पेक्टर नेगी वहीं थे, वायरलेस सेट को ट्यून करने की कोशिश कर रहे थे।

"सर! आप आ गए," नेगी ने राहत भरी आवाज़ में कहा। "दो घंटे पहले हमारा आपसे संपर्क टूट गया था।"

कबीर ने अपने गीले दस्ताने उतारते हुए कहा, "रास्ता बंद है। की-मोड़ के पास हिमस्खलन हुआ है। हम अलग-थलग पड़ गए हैं, नेगी।"

नेगी का चेहरा पीला पड़ गया। "फूड ट्रक... उन्हें तो कल आना था।"

कबीर ने कहा, "ट्रकों की बात छोड़ो। गुप्ता परिवार का क्या हाल है?"

“मंत्री जी बहुत गुस्से में हैं,” नेगी ने धीमी आवाज़ में कहा। “वे शव को हेलीकॉप्टर से ले जाने की मांग कर रहे हैं। मैं उन्हें यह समझा नहीं पा रहा हूँ कि इस स्थिति में कोई हेलीकॉप्टर उड़ान नहीं भर सकता।”

कबीर ने आदेश दिया, "उसे काबू में रखो।" वह तारा की ओर मुड़ा। "बैठ जाओ। 'द वीवर' के बारे में समझाओ।"

तारा इलेक्ट्रिक हीटर के पास बैठी अपने हाथों को मल रही थी। उसने अपने बैग से एक नोटबुक निकाली।

"रेडियो प्रसारण," उसने बात शुरू की। "उसमें 'बुनकर जाग गया है' का जिक्र था। स्पीति की लोककथाओं में, विशेष रूप से बौद्ध धर्म से पहले के बोन ग्रंथों में, थाग-पा नामक एक सत्ता का वर्णन है।"

"थग-पा," नेगी ने अनजाने में ही अपने आप को क्रॉस का निशान बना लिया।
"तुम्हें पता है?" कबीर ने पूछा।
"इसका मतलब है बुनकर," नेगी ने फुसफुसाते हुए कहा। "मेरी दादी हमें इससे डराती थीं। वह कहती थीं कि वह हवाओं के बीच की खाली जगहों में रहता है। वह खामोशी को एक जाल में बुनता है जिसमें आत्माओं को फंसा लेता है।"
कबीर ने बात को खारिज करते हुए कहा, "रूपक तो ठीक है। मुझे तथ्य चाहिए।"
"सच तो यह है," तारा ने कहा, "बुनकर कोई दानव नहीं है। ग्रंथों में इसे एक संरक्षक के रूप में वर्णित किया गया है। केसर द्वार का रक्षक। यह सुनिश्चित करता है कि दोनों लोकों की तरंगें आपस में न मिलें।"
और अगर वे ऐसा करते हैं तो?
"फिर बुनकर हमारी दुनिया में आकर उस दरार को 'सिलता' है," तारा ने कहा। "लेकिन ग्रंथों में लिखा है कि वह उसे जैविक पदार्थों से सिलता है। हड्डी से। उपास्थि से। खून से।"
कबीर को केसर से सिले हुए उस लड़की के मुंह की याद आई। उसे जमी हुई भेड़ की याद आई।
कबीर ने कहा, "कोई कपड़े को फाड़ने की कोशिश कर रहा है। और यह बुनकर उसे जोड़ने के लिए लोगों को मार रहा है?"
"या फिर," तारा ने पलटवार करते हुए कहा, "हत्यारा वीवर की नकल कर रहा है। किसी हत्या को छुपाने के लिए उस किंवदंती का इस्तेमाल कर रहा है।"
कबीर ने पूछा, "डूबना क्यों? खारा पानी क्यों?"
तारा हिचकिचाई। "एक जगह है। पहाड़ों में बहुत ऊपर, लांग्ज़ा पठार के पास। जीवाश्म। लाखों साल पहले स्पीति टेथिस सागर के नीचे हुआ करता था। वहाँ हर जगह अमोनाइट के जीवाश्म मिलते हैं।"
"इसलिए?"
"तो, एक मान्यता यह है कि टेथिस सागर वास्तव में कभी गया ही नहीं," तारा ने कहा। "यह अभी भी यहीं है, बस... अपनी जगह से हट गया है। बेमेल स्थिति में है। एक 'भूतिया सागर'। अगर आप आवृत्ति को सही ढंग से समायोजित करें, तो पानी वापस आ जाता है।"

कबीर उसे घूरता रहा। "तुम कह रही हो कि अनन्या गुप्ता पचास मिलियन साल पहले के एक भूतिया सागर में डूब गई थी?"

"मैं कह रहा हूँ कि वो 4000 मीटर की ऊंचाई पर खारे पानी में डूब गई, कबीर! मुझे कोई बेहतर थ्योरी बताओ!"

बज़ज़ज़ज़ट.

नेगी की मेज पर रखा वायरलेस सेट चीख उठा। यह कोई सामान्य आवाज नहीं थी। यह एक पैटर्न था। लंबा-छोटा-लंबा। मोर्स कोड।

कबीर ने हेडसेट छीन लिया। "यह डीसीपी सेन हैं। अपनी पहचान बताइए।"

एक पल के लिए सन्नाटा छा गया। फिर एक आवाज़ सुनाई दी। साफ़। डरी हुई।

"...यह धंकर मठ की चौकी है... दीवारों के अंदर रोशनी है..."

"Repeat, Dhankar. What lights?"

"...भिक्षु... वे तैर रहे हैं... हे भगवान, दीवारों से पानी बह रहा है... खारा पानी..."

धातु के टूटने की आवाज़। फिर एक चीख जो पानी के अंदर से आती हुई प्रतीत हुई। गड़गड़ाहट... चटकने की आवाज़।

मौन।

"Dhankar?" Kabir shouted. "Dhankar respond!"

तेज हवा के सिवा कुछ नहीं।

कबीर ने हेडसेट नीचे रख दिया। उसने दीवार पर लगे नक्शे को देखा। धंकर मठ एक चट्टान के किनारे पर स्थित था, जो तीस किलोमीटर दूर था।

कबीर ने ठंडी आवाज़ में कहा, "नेगी, हथियारखाने का ताला खोलो। राइफलें निकालो। INSAS और पुरानी .303 राइफलें।"

"Sir? We are going to Dhankar?"

“नहीं,” कबीर ने कहा। “इस तूफान में हम धनकर नहीं पहुँच सकते। आधे रास्ते तक पहुँचने से पहले ही हम मर जाएँगे।”

"तो फिर हम क्या करें?"

कबीर सबूतों वाले लॉकर की ओर गया। उसने अनन्या गुप्ता के निजी सामान से भरा बैग निकाला और उसे मेज पर रख दिया। एक फोन (बंद), एक बटुआ, लिप बाम और चमड़े की जिल्द वाली एक छोटी सी ट्रेकिंग डायरी।
उसने डायरी खोली। आखिरी प्रविष्टि तीन दिन पहले की थी।
10 अक्टूबर। चांदी के रंग का श्रवण यंत्र पहने उस व्यक्ति से मुलाकात हुई। उसने कहा कि उसे भी संगीत सुनाई देता है। उसने मुझे पता बताया। वह उसे 'शांत कमरा' कहता है। उसने कहा कि मैं वहां अपनी मां से मिल सकती हूं।
"उसकी मां की मृत्यु दस साल पहले हो गई थी," तारा ने उसके कंधे के ऊपर से पढ़ते हुए कहा।
"चांदी की बाली वाली यंत्र वाला आदमी," कबीर ने बुदबुदाया। "नेगी, क्या तुम्हें कुछ याद है?"
नेगी ने भौंहें चढ़ा लीं। "चांदी का हियरिंग एड... पुराने ज़माने का? ये तो कर्नल बख्शी की याद दिलाता है।"
"कौन?"
"सेवानिवृत्त सेना अधिकारी। 1962 के युद्ध के अनुभवी। पिन वैली पार्क की सीमा के पास एक बंकर हाउस में रहते हैं। वह थोड़े सनकी हैं, महोदय। अपने साथ एक गाइगर काउंटर लेकर घूमते हैं।"
कबीर ने नक्शे पर नज़र डालते हुए कहा, "पिन घाटी। चरवाहों को शव वहीं मिला था।"
कबीर ने गुस्से में पत्रिका का ढक्कन बंद कर दिया।
कबीर ने कहा, "हमारे पास एक संदिग्ध है। और भूतों के विपरीत, यह अपने पैरों के निशान छोड़ जाता है।"
"सर," नेगी ने घबराते हुए कहा। "कर्नल बख्शी... काफी प्रभावशाली और खतरनाक हैं। वे सिग्नल कोर में थे। मनोवैज्ञानिक अभियानों में काम करते थे।"
कबीर ने गंभीर मुस्कान के साथ कहा, "साइकोलॉजिकल ऑपरेशन। एकदम सही। मैं मौसम से लड़ते-लड़ते थक गया था।"
उसने रैक से एक राइफल उठाई और नेगी की ओर फेंक दी।

"तारा, तुम यहीं रहो। फ्रीक्वेंसी पर नज़र रखो। अगर रेडियो फिर से कुछ बोले, तो उसे रिकॉर्ड कर लो।"
"मैं तुम्हारे साथ आ रही हूँ," तारा ने अपना कोट पकड़ते हुए कहा।
"बिल्कुल नहीं। यह एक छापा है।"
"यह कोई छापा नहीं है, कबीर!" तारा ने झल्लाकर कहा। "बख्शी 60 के दशक में गुप्त ध्वनि प्रयोगों, 'प्रोजेक्ट आकाश' का हिस्सा था। मैंने इस पर अपनी थीसिस लिखी है। तुम्हें मुझसे सही सवाल पूछने की ज़रूरत है, वरना वह तुम्हारे साथ दिमागी खेल खेलता रहेगा और तुम ठंड से जम कर मर जाओगे।"
कबीर ने उसकी ओर देखा। उसने उसकी आँखों में डर देखा, लेकिन साथ ही दृढ़ संकल्प भी।
"ठीक है," कबीर ने कहा। "लेकिन अगर तुम्हें भूत जैसी कोई चीज दिखे, तो उससे बात मत करना। उसे गोली मार देना।"
उसने अपनी रिवॉल्वर के चैंबर की जांच की।
"चलिए कर्नल से मिलने चलते हैं।"

अध्याय 5: बंकर

पिन वैली नेशनल पार्क की सीमा एक ऐसी जगह है जहाँ की सुंदरता अद्भुत और निर्मल है। गर्मियों में भी यह मंगल ग्रह की सतह जैसी दिखती है—लाल मिट्टी, ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियाँ और इतना गहरा सन्नाटा कि कानों में गूंज उठता है। सर्दियों में, बर्फीले तूफान की आड़ में, यह बस एक सफेद खाई बन जाती है।

कबीर ने डायरी में दिए गए निर्देशांकों से दो किलोमीटर पहले जीप रोक दी। बर्फ के ढेर इतने गहरे थे कि जीप के टायर उनमें नहीं जा सकते थे।

कबीर ने तेज हवा के बीच चिल्लाकर कहा, "हम यहां से पैदल चलते हैं।"

उसने तारा को एक भारी टॉर्च थमा दी और अपनी INSAS राइफल की जाँच की। नेगी डरा हुआ लग रहा था, उसने अपनी पुरानी .303 राइफल को ताबीज की तरह पकड़ रखा था।

"कर्नल बख्शी ने 1998 में ही घेराबंदी में तार बिछा दिए थे," नेगी ने दांत किटकिटाते हुए चेतावनी दी। "उन्हें लगता है कि चीनी अभी भी आ रहे हैं।"

कबीर ने आदेश दिया, "संभलकर चलो।"

वे घुटनों तक गहरी बर्फ में धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। ठंड उनके सीने पर भारी बोझ की तरह लग रही थी। हर सांस उन्हें जकड़ रही थी।

बीस मिनट बाद, अँधेरे में से एक आकृति उभरी। यह कोई घर नहीं था। यह कंक्रीट का एक बंकर था, जो पहाड़ की ढलान में आधा धँसा हुआ था, सीमा युद्धों का एक अवशेष। बर्फ से ढका एक विशाल रेडियो एंटीना छत से ऐसे निकला हुआ था मानो तूफ़ान की ओर इशारा करती हुई एक कंकालनुमा उंगली हो।

"यहां रोशनी नहीं है," तारा ने कहा।

कबीर भारी स्टील के दरवाजे के पास पहुंचा। वहां कोई घंटी नहीं थी, केवल एक जंग लगा इंटरकॉम बॉक्स था।

उसने उसे दबाया नहीं। इसके बजाय, उसने तार देखा—एक पतली, पारदर्शी मछली पकड़ने वाली डोरी जो टखने की ऊंचाई पर दहलीज के पार फैली हुई थी।

कबीर ने इशारा करते हुए कहा, "ट्रिपवायर।" वह सावधानी से उसके ऊपर से गुजरा। "नेगी, तारा, ऊँचा कदम रखो।"

कबीर ने अपनी राइफल के बट से स्टील के दरवाजे पर जोरदार प्रहार किया।
"कर्नल बख्शी! पुलिस! दरवाजा खोलो!"
कोई जवाब नहीं। बस वेंटिलेशन के दरवाजों से हवा की सीटी की आवाज आ रही थी।
कबीर ने हैंडल को आज़माया। लॉक था। वह पीछे हट गया और अपनी राइफल को लॉक मैकेनिज़्म पर तान दिया।
खटखट।
अंदर से एक भारी बोल्ट के पीछे खिसकने की आवाज़ आई। दरवाज़ा एक इंच खुल गया।
"अपने रेडियो बंद कर दो," अंधेरे से एक कर्कश आवाज आई। वह सूखी पत्तियों की तरह कमजोर थी। "संचार करने वाले सभी उपकरणों को बंद कर दो। वरना मैं तुम्हें दरवाजे से ही गोली मार दूंगा।"
कबीर ने नेगी को वायरलेस बंद करने का इशारा किया। उसने अपना फोन भी बंद कर दिया, क्योंकि वह बेकार ही था।
कबीर ने कहा, "सब कुछ रद्द है, कर्नल जी। हम सिर्फ अनन्या गुप्ता के बारे में बात करना चाहते हैं।"
दरवाजा खुल गया।
सबसे पहले उन्हें एक गंध महसूस हुई। ओजोन की गंध। झुलसी हुई धातु की गंध। और उसके नीचे, केसर की हल्की, मीठी खुशबू।
कर्नल बख्शी गलियारे में खड़े थे। वे सत्तर वर्ष के आस-पास के दुबले-पतले व्यक्ति थे, जिन्होंने फीका जैतून-हरा स्वेटर और पजामा पैंट पहन रखी थी, जिसे उन्होंने लड़ाकू बूटों में tucked कर रखा था। उनके हाथ में एक लूगर पिस्तौल थी।
लेकिन सबकी निगाहें उनके सिर पर टिक गईं। उन्होंने बड़े-बड़े, औद्योगिक स्तर के शोर-रोधी हेडफ़ोन पहन रखे थे। और उनके बाएं कान से एक चांदी का उपकरण जुड़ा हुआ था—कोई आधुनिक श्रवण यंत्र नहीं, बल्कि एक भारी-भरकम, एनालॉग एम्पलीफायर का तार जो उनकी जेब में जा रहा था।
"अंदर आओ," बख्शी फुफकारा। "जल्दी करो। इससे पहले कि स्टैटिक अंदर आ जाए।"

वे अंदर चले गए। बंकर गर्म था, जो एक तेज़ आवाज़ वाले गोल-मटोल चूल्हे से गर्म हो रहा था। दीवारें अंडे के कार्टन के फोम और ध्वनिरोधी टाइलों से ढकी हुई थीं।

मुख्य कमरा घर जैसा कम और किसी भयानक रेडियो स्टेशन जैसा अधिक लग रहा था। दीवारों पर लगे ऑसिलोस्कोप, हैम रेडियो और फ़्रीक्वेंसी एनालाइज़र हरे और एम्बर रंग की रोशनी से जगमगा रहे थे। तार फर्श पर काले सांपों की तरह फैले हुए थे।

"तुम इसे ट्रैक कर रहे हो," तारा ने एक बड़े मॉनिटर पर प्रदर्शित अव्यवस्थित तरंगरूप को देखते हुए कहा।

"मैं इसे रोकने की कोशिश कर रहा हूँ," बख्शी ने बात सुधारते हुए कहा। उसने पिस्तौल को म्यान में रख लिया, लेकिन अपना हाथ उसके पास ही रखा। "आप दिल्ली के वही पुलिसवाले हैं। जिन्होंने प्रदर्शनकारी का हाथ तोड़ा था।"

कबीर एकदम सख्त हो गया। "मैं डीसीपी सेन हूँ।"

"और तुम," बख्शी ने तारा की ओर देखा। "हड्डियों वाली स्त्री। दोरजे की पोती।"

कबीर ने आगे बढ़ते हुए कहा, "तुम अनन्या को जानते थे। उसने अपनी डायरी में तुम्हारे बारे में लिखा था। उसने बताया था कि तुमने ही उसे 'शांत कमरा' के बारे में बताया था।"

बख्शी चौंक गया। वह एक कंसोल के पास गया और एक डायल को घुमाया। कमरे में गूंज की तीव्रता कम हो गई।

"वह एक नासमझ लड़की थी," बख्शी ने बुदबुदाते हुए कहा। "दुःख लोगों को मूर्ख बना देता है। वह यहाँ भूतों के बारे में, प्रेतों के बारे में पूछने आई थी।"

"क्या तुमने उसे मारा, कर्नल?" कबीर ने सीधे-सीधे पूछा।

बख्शी हँसा। उसकी हँसी घरघराहट और खाँसी जैसी थी। "उसे मार डालूँ? मैंने तो उसे बचाने की कोशिश की थी! मैंने उससे कहा था कि घाटी छोड़ दे। मैंने उससे कहा था कि नमी बढ़ रही है।"

"यह रेगिस्तान है, कर्नल जी," नेगी ने कहा। "यहाँ बिल्कुल भी नमी नहीं है।"

"यहाँ नहीं!" बख्शी ने अपने चांदी के ईयरपीस पर टैप किया। "बैंडविड्थ पर। आकाश फ्रीक्वेंसी पर। यह संतृप्त है। गीली है।"

कबीर ने उपकरणों की ओर देखा। "मुझे प्रोजेक्ट आकाश के बारे में बताओ।"

बख्शी स्तब्ध रह गया। उसने अचानक स्पष्टता से कबीर की ओर देखा। "तुम्हें यह नाम कैसे पता चला?"
"हमें 1962 के प्रयोगों के बारे में पता है," तारा ने कहा। "बंकर में डूबने की घटना। मेजर दिग्विजय सिंह।"
बख्शी कुर्सी पर धंसकर बैठ गए। वे अचानक बहुत बूढ़े दिखने लगे।
"दिग्विजय मेरे कमांडिंग ऑफिसर थे," बख्शी ने फुसफुसाते हुए कहा। "हम कोई दरवाजा खोलने की कोशिश नहीं कर रहे थे। हम एक सोनार हथियार बनाने की कोशिश कर रहे थे। एक ऐसी ध्वनि जो दुश्मन के दिमाग का नक्शा बना सके। लेकिन हमने इसे बहुत कम आवृत्ति पर ट्यून कर दिया। इन्फ्रासाउंड। 7 हर्ट्ज़। डर की प्रतिध्वनि आवृत्ति।"
उसने कबीर की ओर देखा।
"हमें दुश्मन नहीं मिला। हमें तो सागर मिला।"
"टेथिस सागर," तारा ने कहा।
"आप इसे जो चाहें नाम दे दीजिए," बख्शी ने कहा। "यह वास्तविकता की एक ऐसी परत है जहाँ पानी कभी नहीं उतरा। धरती की एक स्मृति। और यह भूखी है। अनन्या... वह अपनी माँ की आवाज़ सुनना चाहती थी। उसने मेरा नक्शा चुरा लिया।"
"कहां का नक्शा?" कबीर ने पूछा।
बख्शी ने कहा, "स्रोत तक। मूल संचरण स्थल तक। ग्लेशियर इतने पिघल चुके हैं कि वह फिर से दिखाई देने लगा है। वह वहां गई थीं।"
"यह कहाँ है, कर्नल?"
बख्शी हिचकिचाया। फिर उसने दीवार पर टंगे एक स्थलाकृतिक मानचित्र पर बने लाल घेरे की ओर इशारा किया।
"धनकर झील," बख्शी ने कहा। "लेकिन वह झील नहीं जो आप देख रहे हैं। झील के नीचे स्थित गुफाओं का जाल। एम्पलीफायर वहीं पर है।"
अचानक, दीवार पर लगे ऑसिलोस्कोप बेकाबू हो गए। हरी रेखाएं नुकीली लाल रेखाओं में बदल गईं।
कमरे में एक तीखी सीटी की आवाज गूंज उठी, जो ध्वनिरोधक परत को भी भेद रही थी।

बख्शी ने अपना सिर पकड़ लिया और चिल्लाने लगा, "यह हमें ढूंढ ही लिया! तुम इसे अपने साथ लाए हो!"
"क्या?" कबीर ने शोर के बीच चिल्लाकर पूछा।
"वह बुनकर!" बख्शी चिल्लाया। "वह ऊष्मीय धाराओं पर सवार है! उसने तुम्हारे ताप चिह्न का पीछा किया!"
धड़ाम।
बंकर की छत पर किसी चीज से टक्कर हुई। आवाज भारी और गीली थी।
प्रहार प्रहार।
"नेगी, दरवाजे पर नज़र रखो!" कबीर ने अपनी राइफल उठाई।
जिस भारी स्टील के दरवाजे से वे अभी-अभी अंदर आए थे, वह कांपने लगा। धातु के अंदरूनी हिस्से पर नमी की बूंदें - पानी की बूँदें - जमा होने लगीं।
"इसे पसीना आ रहा है," तारा ने हांफते हुए कहा।
कबीर को एहसास हुआ, "खारा पानी।"
छत में लगे वेंटिलेशन वेंट फट गए।
बंकर में काला, जमा देने वाला पानी ऐसे बह रहा था जैसे कोई रिसाव हो, बल्कि जैसे आग बुझाने वाली नली से पानी की बौछार हो रही हो। और पानी के साथ कुछ और भी आया।
जेलीफिश के टेंटेकल्स की तरह लंबे, पारदर्शी रेशे, लेकिन रस्सियों जितने मोटे। वे गर्मी की तलाश में हवा में लहरा रहे थे।
उनमें से एक ने अचानक हमला किया और कर्नल बख्शी की गर्दन को जकड़ लिया।
"मेरी बात मत सुनो!" बख्शी ने गरगराते हुए टेंटेकल को नोचा। इससे उसकी त्वचा जल उठी और तुरंत ही फ्रॉस्टबाइट का निशान पड़ गया।
"गोली चलाओ!" कबीर दहाड़ा।
उसने गोलीबारी शुरू कर दी। गोलियां टेंटेकल्स को चीरती हुई पानी और मवाद के छींटे उड़ाती हुई निकलीं, लेकिन वे जीव आते ही रहे।
नेगी ने अपनी .303 राइफल से गोली चलाई। राइफल की तेज आवाज बंद जगह में इतनी गूंजी कि कान बहरे हो गए।

बख्शी को घसीटते हुए ऊपर की ओर, टूटे हुए वेंट की तरफ ले जाया जा रहा था।
"झील!" बख्शी चीखा, उसका चेहरा बैंगनी पड़ गया। "एम्पलीफायर को नष्ट करो! वरना पूरी घाटी डूब जाएगी!"
एक भयानक चरमराहट के साथ, कर्नल को वेंटिलेशन शाफ्ट में खींच लिया गया। उनका शरीर मुड़ गया, हड्डियाँ चटकने लगीं, क्योंकि उन्हें एक ऐसे छेद से निचोड़ा जा रहा था जो किसी इंसान के लिए बहुत छोटा था।
फिर सन्नाटा छा गया।
ज़मीन पर पानी का स्तर बढ़ना बंद हो गया। तंतु सिकुड़ गए।
कबीर हांफता हुआ खड़ा था, उसकी बंदूक से धुआं निकल रहा था। कमरा पूरी तरह से भीगा हुआ था।
"वह चला गया," नेगी ने सिसकते हुए कहा। "वह उसे ले गया। बिल्कुल भेड़ों की तरह।"
कबीर ने दीवार पर लगे नक्शे को देखा। उसने उसे फाड़कर अपनी जैकेट में ठूंस दिया।
कबीर ने कहा, "हम जा रहे हैं। अभी।"
"स्टेशन तक?" नेगी ने पूछा।
“नहीं,” कबीर ने छत में बने उस अंधेरे छेद की ओर देखा जहाँ से कर्नल गायब हो गया था। “धनकर के पास। हमें तूफान आने से पहले इस गुफा को ढूंढना होगा।”

अध्याय 6: देह की आवृत्ति

जीप तक वापस जाने का सफर एड्रेनालाईन और भय से भरा हुआ था। तूफान और भी तेज हो गया था। बर्फ अब सुइयों की तरह क्षैतिज रूप से गिर रही थी।

वे गाड़ी के अंदर दुबक गए, इंजन धीमी गति से चल रहा था और आवाज भी ठीक से नहीं आ रही थी।

“धनकर जाना नामुमकिन है,” नेगी ने कांपते हाथों से कहा, उसके हाथ इतने कांप रहे थे कि वह सिगरेट भी नहीं जला पा रहा था। “रास्ता बह गया है। और अगर हम वहां पहुंच भी गए तो... मठ में भूत-प्रेत का वास है, साहब। आपने रेडियो पर सुना ही होगा।”

"हम मठ नहीं जा रहे हैं," कबीर ने डैशबोर्ड की रोशनी में बख्शी के नक्शे को देखते हुए कहा। "हमें झील की तलहटी तक जाना है। वह काफी ऊपर है।"

"कबीर," तारा ने धीरे से कहा। वह अपने हाथ को घूर रही थी।

"क्या?"

"देखना।"

उसने अपना दाहिना हाथ ऊपर उठाया। उसकी उंगलियों के सिरों पर त्वचा छिल रही थी। लेकिन अंदर की त्वचा कच्ची नहीं थी।

त्वचा की आंतरिक परत में छोटे-छोटे, सूक्ष्म क्रिस्टल बन रहे थे। नमक के क्रिस्टल।

"मैंने बंकर में पानी को छुआ," उसने फुसफुसाते हुए कहा। "जब पानी उछला।"

कबीर ने उसका हाथ पकड़ा। वह बर्फ की तरह ठंडा था।

"दर्द हो रहा है क्या?"

"नहीं," तारा ने कहा, उसकी आँखें एक अलग तरह के भय से चौड़ी हो गईं। "ऐसा लगता है... जैसे मैं भरी हुई हूँ। जैसे मुझे अपनी नब्ज़ में समुद्र की आवाज़ सुनाई दे रही हो।"

कबीर ने कहा, "हमें आपको डॉक्टर के पास ले जाना होगा।"

"कोई डॉक्टर इसे ठीक नहीं कर सकता," तारा ने अपना हाथ छुड़ा लिया। "यह आवृत्ति का मामला है, कबीर। यह मेरी जैविक क्रियाओं को बदल रहा है। पानी को खारे पानी में बदल रहा है।"

उसने उसकी ओर देखा, और एक पल के लिए, उसकी पुतलियाँ बकरी की आँखों की तरह, बुनकर की आँखों की तरह, आयताकार आकार में फैलती हुई प्रतीत हुईं।
"हमें सिग्नल बंद करना होगा," उसने दृढ़ स्वर में कहा। "अगर हमने धंकर में एम्पलीफायर बंद नहीं किया, तो मैं अकेली नहीं रहूंगी। पूरी घाटी बदल जाएगी।"
कबीर ने उसके हाथ की तरफ देखा, फिर बाहर जमी हुई बंजर भूमि की तरफ। उसे एहसास हुआ कि वह सही कह रही थी। यह अब हत्या की जांच नहीं थी। यह संगरोध का उल्लंघन था।
कबीर ने कहा, "नेगी, क्या तुम्हें स्नोमोबाइल चलाना आता है?"
"जी हाँ, महोदय। पर्यटन विभाग ने काज़ा सर्किट हाउस में दो स्लेज खड़ी कर रखी हैं।"
कबीर ने कहा, "हम इन्हें अपने कब्जे में ले रहे हैं। हम एक घंटे में धनकर के लिए रवाना होंगे।"

अध्याय 7: मौन लोगों का गाँव

Dhankar Village. 11:30 PM.

धंकर कभी स्पीति की राजधानी हुआ करता था, जो मिट्टी और पत्थरों से बनी एक नुकीली चट्टान पर निर्मित एक किला था। अब यह एक वीरान शहर बन चुका था।

घुमावदार सड़क के निचले हिस्से में स्नोमोबाइल चालकों ने अपने इंजन बंद कर दिए। मोटरों की आवाज थम गई और उसकी जगह तेज हवा की आवाज सुनाई देने लगी।

कबीर ने इशारा किया, "बत्तियां बंद करो।"

वे घुमावदार रास्तों पर चढ़े। गाँव में अंधेरा था। खाना पकाने के लिए आग नहीं जल रही थी। कुत्तों के भौंकने की कोई आवाज़ नहीं थी।

"बहुत सन्नाटा है," नेगी ने फुसफुसाते हुए कहा।

वे मिट्टी के मकानों के पहले समूह तक पहुँचे। दरवाजे पूरी तरह खुले हुए थे।

कबीर हथियार उठाए पहले घर में दाखिल हुआ।

अंदर, एक परिवार खाने की मेज के चारों ओर बैठा था। एक पिता, एक माँ और दो बच्चे।

वे मर चुके थे।

लेकिन उनकी हत्या हिंसा से नहीं हुई थी। वे सीधे बैठे थे, उनके हाथ मेज पर टिके थे। उनके मुंह कच्चे, लाल केसर के धागों से सिले हुए थे।

और उनकी आँखें...

कबीर ने अपना प्रकाश चमकाया। उनकी आँखें गायब हो चुकी थीं। आँखों के गड्ढों में पानी के छोटे-छोटे कुंड जम कर ठोस हो गए थे।

"उन्होंने लड़ाई नहीं की," तारा ने उसके पीछे खड़े होकर फुसफुसाते हुए कहा। "उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया।"

"क्यों?" कबीर ने पूछा। "वे किसी को ऐसा क्यों करने देंगे?"

"क्योंकि वे सुन रहे थे," तारा ने कमरे के कोने की ओर इशारा करते हुए कहा।

वहाँ एक पुराना रेडियो पड़ा था। उसमें से हल्की सी आवाज़ आ रही थी। कोई शोर नहीं। एक धीमी, लयबद्ध गूंज। थरथराहट... थरथराहट... थरथराहट।

यह दिल की धड़कन जैसी आवाज थी। या ढोल की आवाज जैसी।

कबीर ने आदेश दिया, "इसकी बात मत सुनो। नेगी, बाकी घरों की जाँच करो।"
नेगी दो मिनट बाद बर्फ में उल्टी करते हुए वापस आया। "वे सभी, महोदय। बारह घर। सभी लोग। यहां तक कि पशुधन भी।"
कबीर के सीने में ठंडी नफरत उमड़ रही थी। यह एक नरसंहार था। एक रस्म के तौर पर की गई सफाई।
“यह किसने किया?” कबीर ने गुस्से से कहा। “एक आदमी यह नहीं कर सकता।”
"शायद उन्होंने खुद ही ऐसा किया हो," तारा ने खोखली आवाज़ में कहा। "सामूहिक उन्माद। संकेत उन्हें दरवाजा खोलने के लिए कहता है, उन्हें पात्र तैयार करने के लिए कहता है..."
कबीर ने पूछा, "सिग्नल कहां से आ रहा है?"
तारा धीरे-धीरे चट्टान की ओर मुड़ी, मठ को पार करते हुए, गांव के ऊपर जमी हुई ऊँचाई पर स्थित झील की ओर।
"ऊपर," उसने कहा। "मैं इसे महसूस कर सकती हूँ। मेरा हाथ जल रहा है।"
उन्होंने ऊपर देखा। जमी हुई झील की बर्फ के नीचे से एक अजीब, हल्के नीले रंग की रोशनी स्पंदित हो रही थी।
और फिर, उन्होंने वह आकृति देखी।
पहाड़ी की चोटी पर, नीली रोशनी में एक आकृति उभरती हुई दिखाई दे रही थी। उसने याक की ऊन का भारी लबादा ओढ़ रखा था।
उसने एक लंबा, घुमावदार सींग उठाया—एक कांगलिंग (मानव जांघ की हड्डी से बना एक तुरही)—और बजाया।
जो आवाज़ निकली वह कोई सुर नहीं थी। वह एक चीख थी जो तूफान को चीरती हुई निकल गई।
"वीवर?" नेगी ने अपनी राइफल उठाते हुए पूछा।
"नहीं," तारा ने कहा। "वह पुजारी है। सम्मनर है।"
वह आकृति मुड़ी और चट्टान की ओर चली गई, मानो पहाड़ धुएं का बना हो, और वह गायब हो गई।
कबीर ने कहा, "वह गुफा में जा रहा है। प्रयोगशाला में।"

उसने अपने गोला-बारूद की जाँच की। उसके पास दो मैगज़ीन बची थीं।
कबीर ने कहा, "नेगी, यहीं रुको। निकास द्वार की रखवाली करो। अगर हमारे अलावा कोई और उस पहाड़ से नीचे आता है तो उसे गोली मार दो।"
"सर, मैं यहां लाशों के साथ नहीं रह सकता!"
"तुम पुलिसवाले हो, नेगी। अपना काम करो।"
कबीर ने तारा की ओर मुड़कर पूछा, "क्या तुम चढ़ाई कर सकती हो?"
तारा ने अपने हाथ की ओर देखा। नमक के क्रिस्टल उसकी कलाई पर फैल रहे थे। उसने अपनी उंगलियों को हिलाया।
"मुझे नहीं लगता मेरे पास कोई विकल्प है, कबीर। मैं पहले से ही इस सर्किट का हिस्सा हूं।"
वे नीली रोशनी की ओर चढ़ाई करने लगे। हवा पतली होती गई। ओजोन और केसर की गंध तेज़ होती गई। और बर्फ के नीचे, भूतिया सागर उनका इंतज़ार कर रहा था।

अध्याय 8: प्रतिध्वनियों की प्रयोगशाला

पाताल लोक का प्रवेश द्वार कोई विशाल खुला हुआ मुँह नहीं था, बल्कि एक जंग लगा हुआ विस्फोटरोधी दरवाजा था जो जमे हुए झरने के पर्दे के पीछे छिपा हुआ था।
कबीर और तारा चट्टान पर खड़े थे, पतली हवा के कारण उनके फेफड़े जल रहे थे। वे 4,200 मीटर की ऊंचाई पर थे। यहाँ का तूफान एक सफेद शून्य जैसा था, जो आकाश और पहाड़ के बीच के अंतर को मिटा रहा था।
"वह यहाँ से गुजरा था," तारा हांफते हुए बोली, और अपने संक्रमित हाथ को सीने से लगा लिया। "मैं उसकी नब्ज़ महसूस कर सकती हूँ। ऐसा लग रहा है जैसे कोई चुंबक मेरे खून में मौजूद लोहे को अपनी ओर खींच रहा हो।"
कबीर ने चट्टान का मुआयना किया। बर्फ हाल ही में पिघली थी। उसके नीचे, एक सैन्य बंकर का भारी स्टील का दरवाजा थोड़ा खुला हुआ था। धातु पर फीके सफेद रंग से भारतीय सेना के इंजीनियर कोर का प्रतीक चिन्ह और एक कोडनेम खुदा हुआ था: प्रोजेक्ट आकाश - 1961।
कबीर ने बुदबुदाते हुए कहा, "यह सच है। बख्शी को भ्रम नहीं हो रहा था।"

उसने भारी दरवाजे को धक्का दिया। जमे हुए कब्जों पर वह चरमराया और एक ऐसे अंधेरे में खुला जिसने उसकी टॉर्च की रोशनी को भी निगल लिया।

कबीर ने राइफल उठाते हुए आदेश दिया, "पास ही रहो। और किसी भी धातु की चीज को मत छूना।"

वे अंदर चले गए।

तूफान की खामोशी पल भर में एक धीमी, धड़कन भरी गूंज में बदल गई। यह एक ऐसी ध्वनि थी जिसे सुना नहीं जा सकता था, बल्कि दांतों में महसूस किया जा सकता था। थरथराहट... थरथराहट... थरथराहट।

सुरंग को पहाड़ के ग्रेनाइट में सीधा खोदा गया था। अजगर जितने मोटे तार छत पर बिछे हुए थे, जिन पर नमी की बूंदें टपक रही थीं। यहाँ की हवा गर्म, नम और ओजोन तथा गीली ऊन जैसी गंध से भरी थी।

"दीवारों को देखो," तारा ने फुसफुसाते हुए अपनी रोशनी चमकाई।

कबीर ने गौर से देखा। चट्टानी दीवारें केवल खोदी ही नहीं गई थीं; बल्कि उन पर अजीबोगरीब, षट्भुजाकार ध्वनिरोधी टाइलें लगी हुई थीं। लेकिन टाइलें एक गाढ़े, पारदर्शी चिपचिपे पदार्थ से ढकी हुई थीं।

"शैवाल," तारा ने चाकू से थोड़ा सा खुरचते हुए कहा। "समुद्री शैवाल। एक सूखी गुफा में।"

वे और अंदर चले गए। सुरंग एक विशाल गुफा में जाकर खुल गई।

कबीर एकदम रुक गया।

यह एक हैंगर के आकार की प्रयोगशाला थी। बीच में एक गहरी खाई थी, जिसके ऊपर से होकर गुजरने वाले चबूतरे बने हुए थे। दीवारों पर 1960 के दशक के विशाल कंप्यूटरों की कतारें लगी हुई थीं—जिनमें रील-टू-रील टेप डेक, अग्निशामक यंत्रों के आकार की वैक्यूम ट्यूब और ऑसिलोस्कोप शामिल थे।

लेकिन वह खंडहर था। धातु जंग खा चुकी थी, मानो अत्यधिक गर्मी से मुड़ गई हो। और हर जगह कपड़े बिखरे पड़े थे।

वर्दी।

जैतून के हरे रंग की सैकड़ों सेना की वर्दी फर्श पर, कुर्सियों पर, रैंप पर बेतरतीब ढंग से पड़ी थीं।
"लाशें कहाँ हैं?" कबीर ने गूंजती हुई आवाज़ में पूछा।
वह एक कुर्सी के पास पहुँचा जहाँ एक वर्दी इस तरह रखी थी मानो कोई उस पर बैठा हो। उसने अपनी राइफल की नली से जैकेट को छुआ। वह पिचक गई। खाली।
"वे मरे नहीं," तारा ने कांपती हुई आवाज में कहा। "वे... घुल गए।"
उसने वर्दी के नीचे ज़मीन की ओर इशारा किया। एक गहरा, जमा हुआ धब्बा उस जगह को दर्शा रहा था जहाँ सैनिक खड़ा था। और उस धब्बे के बीचोंबीच, भूरे रंग की धूल का ढेर था।
"नमक," तारा ने फुसफुसाते हुए कहा। "वे तुरंत निर्जलित हो गए। उनके शरीर से सारा पानी निकल गया।"
"कहां से खींचा?"
तारा ने कमरे के केंद्र की ओर इशारा किया।
खाई के ऊपर एक विशाल कांच का गोला लटका हुआ था, जिसका व्यास लगभग बीस फीट था। यह मोटे केबलों और पाइपों के माध्यम से छत से जुड़ा हुआ था।
वह गोला गहरे, घूमते हुए पानी से भरा हुआ था।
"कैपेसिटर," तारा ने कंसोल पर लगी एक जंग लगी पट्टिका को पढ़ते हुए कहा। "तरल माध्यम भंडारण।"
कबीर खाई के किनारे तक गया। उसने नीचे देखा। खाई अथाह प्रतीत हो रही थी, लेकिन वहीं से एक गूंज सुनाई दे रही थी।
कबीर को एहसास हुआ, "यह सिर्फ एक प्रयोगशाला नहीं है। यह एक वाद्य यंत्र है। पूरा पहाड़ ही वाद्य यंत्र है।"
अचानक, उनके बगल में रखी रील-टू-रील मशीन से एक आवाज़ आई। टेप घूमने लगा।
क्लिक... सरसराहट...
धूल भरे स्पीकरों से एक तेज आवाज निकली।

"...लॉग एंट्री 44. 12 अक्टूबर, 1962. डॉ. अय्यर बोल रहे हैं। हमें संपर्क स्थापित हो गया है। विषय, प्राइवेट मिलर ने संपर्क स्थापित कर लिया है। वह कहता है कि पानी गर्म है। वह कहता है... वह कहता है कि वीवर उसकी आँखें सिल रहा है..."
टेप की गति तेज हो गई, एक तीखी चीख सुनाई दी, और फिर वह टूट गया।
कबीर घूम गया। "हम अकेले नहीं हैं।"
कैटवॉक के बिल्कुल आखिरी छोर पर, कांच के गोले के पास, एक परछाई हिल रही थी।
यह वही आकृति थी जिसे उन्होंने पहाड़ी की चोटी पर देखा था। पुजारी।
वह एक कंट्रोल पैनल के पास खड़ा था, उसका हाथ एक बड़े पीतल के लीवर पर टिका हुआ था।
कबीर ने INSAS की ओर निशाना साधते हुए चिल्लाकर कहा, "पुलिस! कंसोल से दूर हटो!"
वह आकृति धीरे-धीरे मुड़ी।
नज़दीक से देखने पर भयावह दृश्य रोंगटे खड़े कर देने वाला था। उस व्यक्ति ने लामा के फटे-पुराने वस्त्र पहन रखे थे, लेकिन उसकी त्वचा पारदर्शी थी, जो उसकी हड्डियों पर कसकर खिंची हुई थी। त्वचा के आर-पार कबीर को नसें धड़कती हुई दिखाई दे रही थीं—लाल खून से नहीं, बल्कि एक गहरे, जैव-प्रकाशित नीले तरल पदार्थ से।
“आप लोग देर से आए हैं, यात्रियों,” पुजारी ने कहा। उनकी आवाज़ वैसी ही गीली और कर्कश थी जैसी उन्होंने रेडियो पर सुनी थी। “सर्किट लगभग बंद हो चुका है।”
"इसे बंद करो!" कबीर चिल्लाया।
"इसे बंद कर दें?" पुजारी मुस्कुराया, जिससे उसके नुकीले दाँत दिखाई दिए। "हम तो बस इसे जगा रहे हैं। इंस्पेक्टर, दुनिया बहुत शोरगुल भरी है। इसे शांति की ज़रूरत है।"
पुजारी ने लीवर खींचा।
क्लैंग।
मशीनरी चरमरा उठी। गड्ढे के ऊपर स्थित विशाल कांच का गोला नीचे उतरने लगा।
"तारा, भागो!" कबीर चिल्लाया।
उसने गोली चलाई। तीन गोलियां।
गोलियां पुजारी की छाती में लगीं।

वहाँ खून नहीं था। इसके बजाय, घावों से पीले रंग की धूल का गुबार फूट पड़ा। केसरिया। वह आदमी खोखला था, सूखे केसरिया फूलों से भरा हुआ।

पुजारी हँसते हुए लड़खड़ाकर पीछे हट गया, लेकिन गिरा नहीं। "शरीर तो बस एक पात्र है! हमने इसे खाली कर दिया ताकि समुद्र के लिए जगह बन सके!"

उसने कबीर पर झपट्टा मारा।

कबीर एक तरफ हट गया और उसने राइफल के बट से पुजारी के चेहरे पर वार किया। खोपड़ी सूखे कागज की तरह चूर-चूर हो गई। पुजारी रेलिंग से नीचे गिर गया और खाई में जा गिरा।

लेकिन गिरते समय वह चीखा नहीं। वह विलीन हो गया। अंधेरे में गिरने से पहले ही उसका शरीर केसरिया धूल और नमक के बादल में बदल गया।

"कबीर!" तारा चिल्लाई।

कबीर मुड़ा। कांच का गोला फर्श में बने एक डॉकिंग पोर्ट में नीचे उतर चुका था। उसके अंदर का पानी और भी ज़्यादा चमक रहा था।

और उस गोले के अंदर, अंधेरे पानी में तैरता हुआ, एक चेहरा था।

वह अनन्या गुप्ता थी।

अध्याय 9: गीला तार

"वह अंदर है!" तारा हांफते हुए कांच की ओर भागी।

अनन्या तरल के केंद्र में तैर रही थी, उसके बाल एक प्रभामंडल की तरह लहरा रहे थे। उसकी आँखें खुली थीं, खाली निगाहों से घूर रही थीं, लेकिन लाल बीज गायब हो चुके थे। उसकी आँखें सफेद थीं—अंधी, धुंधली मोतियाबिंद से भरी हुई।

उसके गले और कनपटी में तार चुभोए गए थे, जो उसे मशीनरी से जोड़ते थे।

"वह सीपीयू है," तारा ने भयभीत होकर कहा। "वे सिग्नल को प्रोसेस करने के लिए उसके दिमाग का इस्तेमाल कर रहे हैं। जैविक कंप्यूटिंग। मानव मस्तिष्क ही एकमात्र ऐसी जटिल चीज है जो शून्य की आवृत्ति का अनुवाद कर सकती है।"

कबीर ने शीशा तोड़ने के लिए अपनी राइफल उठाते हुए पूछा, "क्या वह ज़िंदा है?"

"नहीं!" तारा ने उसका हाथ पकड़ लिया। "अगर तुमने शीशा तोड़ा, तो दबाव के अंतर से उसकी तुरंत मौत हो जाएगी। गेज देखो। उस पानी का दबाव गहरे समुद्र के स्तर तक है।"

"तो फिर हम उसे बाहर कैसे निकालेंगे?"

"हमें इसे खाली करना होगा," तारा ने टैंक के किनारे लगे एक मैनुअल रिलीज़ वाल्व की ओर इशारा करते हुए कहा। "लेकिन अगर हम इसे खाली कर देंगे, तो सिग्नल बंद हो जाएगा। वीवर को नुकसान हो सकता है..."

"क्या हो सकता है?"

"शायद उसे बुरा लग जाए," तारा ने कहा।

कमरे में गूंज तेज होती गई। दीवारों पर लगे मॉनिटर अचानक चालू हो गए।

...दरवाजा खुला है... यह संदेश हरे रंग के अक्षरों में हर स्क्रीन पर चमक रहा था।

"करो," कबीर ने कहा। "इसे खाली कर दो।"

तारा ने रिलीज वाल्व के जंग लगे पहिये को पकड़ लिया। पचास साल के जंग से जूझते हुए वह कराह उठी।

"यह फंस गया है!"

कबीर ने अपनी राइफल कंधे पर टांगी और उसके साथ स्टीयरिंग व्हील पकड़ लिया। "तीन गिनने पर। एक, दो, तीन!"

उन्होंने जोर लगाया। धातु चीख उठी। पहिया एक चौथाई इंच घूम गया।
अचानक, कमरे में एक तेज़ आवाज़ गूंजी। कोई यांत्रिक आवाज़ नहीं। एक आवाज़।
"...कबीर..."
यह हर जगह से आ रहा था। दीवारों से। फर्श से। उसके अपने दिमाग के अंदर से।
कबीर एकदम जम गया। उसने स्टीयरिंग व्हील छोड़ दिया।
"नहीं," उसने फुसफुसाते हुए कहा।
कांच के गोले के प्रतिबिंब में, अनन्या के तैरते हुए शरीर के पीछे एक आकृति दिखाई दी।
वह एक महिला थी। उसने लाल रंग की साड़ी पहनी हुई थी, जो पूरी तरह भीगी हुई थी। उसकी त्वचा पीली पड़ गई थी, और उसके लंबे काले बालों से पानी टपक रहा था।
"Riya?" Kabir breathed.
वह उसकी पत्नी थी। रिया, जिसकी तीन साल पहले दिल्ली में एक कार दुर्घटना में मौत हो गई थी। रिया, जिसकी मौत बारिश में तेज गति से गाड़ी चलाने के कारण हुई थी।
वह आकृति मशीनरी के पीछे से निकली। वह ठोस और वास्तविक लग रही थी।
“कबीर, तुमने मुझे पानी में छोड़ दिया था,” रिया ने कहा। उसकी आवाज़ उदास और मधुर थी। “पानी बहुत ठंडा था।”
"कबीर, ये वो नहीं है!" तारा ने उसका कंधा पकड़ते हुए चिल्लाकर कहा। "ये तो परछाई है! केसरिया रंग तुम्हारी प्रतिरोधक क्षमता कम कर देता है! उसकी तरफ मत देखो!"
कबीर फुसफुसाते हुए उस आकृति की ओर बढ़ा, "इस बार मैं तुम्हें बचा सकता हूँ। मैं यहीं हूँ, रिया।"
"मेरे पास आओ," रिया नाम की उस आकृति ने अपनी बाहें खोलते हुए कहा। उसकी उंगलियां लंबी थीं, बहुत लंबी। वे नुकीले, पारदर्शी पंजों में समाप्त होती थीं।
"कबीर!" तारा ने उसके चेहरे पर ज़ोरदार थप्पड़ मारा।
चुभन ने कबीर का ध्यान भंग कर दिया। कबीर ने पलकें झपकाईं।
लाल साड़ी वाली महिला एक खराब टीवी सिग्नल की तरह झिलमिला रही थी। एक पल के लिए, छवि गायब हो गई, और उसके नीचे का दृश्य सामने आ गया:

भूरे, गीले मांस से बना एक लंबा, दुबला-पतला प्राणी। चेहरा नहीं था। बस मुंह के लिए एक खड़ी दरार थी।

जुलाहा।

यह कोई भूत नहीं था। यह एक जैविक इकाई थी जिसने उसकी याददाश्त की नकल की थी।

"तू बदसूरत कमीना है," कबीर गुस्से से बोला।

उसने अपनी राइफल उठाई और पूरी मैगज़ीन उस प्राणी पर खाली कर दी।

गोलियां धूसर मांस में धंस गईं। प्राणी चीख उठा—धातु के फटने जैसी आवाज—और काले कीचड़ के एक पोखर में विलीन हो गया।

"यह असली नहीं है!" तारा चिल्लाई। "यह आवृत्ति का एक प्रकटीकरण है! जब तक मशीन चल रही है, यह हमारे बुरे सपनों को सच कर सकती है! पहिया घुमाओ!"

कबीर ने खुद को वाल्व पर जोर से पटका। उसके शरीर में एड्रेनालाईन का प्रवाह बढ़ गया। उसने एक प्रचंड दहाड़ के साथ जोर से खींचा।

चीख!

वाल्व घूम गया।

कमरे में गैस निकलने की सरसराहट गूंज उठी। गोले में पानी का स्तर तेजी से गिरने लगा और फर्श की जाली में बहने लगा।

टैंक के अंदर अनन्या का शरीर कांपने लगा। तार उसकी त्वचा से अलग हो गए।

जैसे-जैसे पानी कम होता गया, भनभनाहट धीमी होती गई। मॉनिटर बंद हो गए। दमनकारी भय का भाव दूर हो गया और उसकी जगह गुफा की ठंडी, बासी हवा ने ले ली।

कांच का ढक्कन सरसराहट के साथ खुल गया।

कबीर ने अनन्या को तब पकड़ा जब वह पूरी तरह भीगी हुई और ठंड से कांपती हुई टंकी से बाहर फिसल रही थी।

उसे खांसी आई और उसने फेफड़ों से खारा पानी धातु की जाली पर निकाल दिया।

"वह सांस ले रही है!" तारा ने उसकी नब्ज़ जाँची। "यह तो चमत्कार है।"

अनन्या की आंखें धीरे से खुलीं। वे अभी भी दूधिया सफेद थीं। उसने बेताब होकर कबीर की जैकेट को पकड़ लिया।

"तुमने गाना बंद कर दिया," उसने कर्कश स्वर में कहा।
कबीर ने उसके चारों ओर अपना जैकेट लपेटते हुए कहा, "सब खत्म हो गया। हमने तुम्हें बचा लिया।"
"नहीं," अनन्या ने सिर हिलाते हुए फुसफुसाया। "आप नहीं समझते। मैं बैटरी नहीं थी।"
"क्या?"
अनन्या ने अपनी अंधी आँखों से आँसू बहाते हुए कहा, "मैं ही ताला थी। मशीन... वही दरवाज़ा बंद रखे हुए थी। पुजारी... उसने तुम्हें धोखा दिया।"
कबीर ने खाली टंकी की ओर देखा।
कबीर ने धीरे से कहा, "अगर मशीन उसे बंद रखे हुए थी, और हमने बस उसे बंद कर दिया..."
एक गहरी, भूगर्भीय गड़गड़ाहट से पहाड़ हिल गया। छत से धूल गिरने लगी।
तारा ने अपने हाथ की ओर देखा। नमक के क्रिस्टल अब तेजी से बढ़ रहे थे, नंगी आंखों से दिखाई दे रहे थे और उसकी बांह पर फैल रहे थे।
"कबीर," तारा ने कांपती हुई आवाज़ में कहा। "इस खाई को देखो।"
उन्होंने रेलिंग के ऊपर से मशीन के नीचे स्थित अंधेरे गड्ढे में झाँका।
अंधेरा आगे बढ़ रहा था।
गहराई से जो उठ रहा था वह पानी नहीं था। वह एक घना, केसरिया रंग का कोहरा था जिसमें प्राचीन क्षय की गंध आ रही थी।
और कोहरे के भीतर, हजारों आकृतियाँ गतिमान थीं। प्रेत आत्माएँ। भूखे भूत।
कबीर ने कहा, "हमने सारे द्वार खोल दिए।"
अनन्या ने फुसफुसाते हुए कहा, "भागो। छत पर भागो। आसमान ही एकमात्र सुरक्षित जगह है।"

अध्याय 10: आत्माओं का हिमस्खलन

प्रयोगशाला से भाग निकलना पागलपन की बढ़ती लहर के खिलाफ एक दौड़ थी।

केसरिया रंग का कोहरा तेजी से ऊपर उठ रहा था और गुफा को भर रहा था। जहां कोहरा धातु की पटरियों को छूता, वहां तुरंत जंग लग जाती। जहां यह पुराने यूनिफॉर्म को छूता, वे चूर-चूर हो जाते।

"कोहरे को अपने ऊपर हावी मत होने दो!" तारा ने अनन्या को अपने कंधे पर सहारा देते हुए चिल्लाकर कहा।

वे सुरंग से वापस भागे। वह भिनभिनाहट गायब हो गई थी, उसकी जगह एक कहीं अधिक भयानक आवाज़ सुनाई दे रही थी—हजारों आवाज़ों का कांपना जो एक ऐसी भाषा में फुसफुसा रही थीं जो कानों को चुभ रही थी।

वे विस्फोटरोधी दरवाजे से बाहर निकलकर बर्फीले तूफान में जा गिरे।

रात बीत चुकी थी। स्पीति के ऊपर का आकाश अब काला नहीं था।

यह हरा था। चोटियों के ऊपर मंद, स्पंदित प्रकाश की एक ऑरोरा बोरेलिस (उत्तरी रोशनी) घूम रही थी।

"वातावरण! यहाँ का वातावरण बहुत ही उच्च स्तर का है," तारा हांफते हुए बर्फ में घुटनों के बल बैठ गई।

उनके नीचे, धंकर गांव में बत्तियां जल रही थीं। लेकिन बिजली की बत्तियां नहीं थीं।

आग।

घर जल रहे थे। और ग्रामीण लोग आग की लपटों के बीच से गुजर रहे थे।

लेकिन वे चल नहीं रहे थे। वे झटके खा रहे थे, मानो अदृश्य डोरियों से कठपुतली की तरह नचाए जा रहे हों।

कबीर ने अपनी राइफल के स्कोप से उस भयावह दृश्य को देखते हुए कहा, "कोहरा गांव तक पहुंच गया था।"

अनन्या ने अब और भी दृढ़ स्वर में कहा, "हमें क्ये मठ पहुँचना होगा। क्ये के भिक्षुओं के पास प्रतिध्वनि (काउंटर-रेजोनेंस) की शक्ति है।"

कबीर चिल्लाया, "कये बीस किलोमीटर दूर है! और हमारे पास कोई वाहन नहीं है!"

कबीर ने ढलान की ओर देखते हुए कहा, "हमारे पास गुरुत्वाकर्षण है। और हमारे पास स्लेज भी हैं।"
वे चट्टान से नीचे उतरकर उस जगह पर पहुंचे जहां उन्होंने स्नोमोबाइल छोड़े थे।
नेगी जा चुका था।
"नेगी!" कबीर चिल्लाया।
बर्फ में खून का एक धब्बा था। और पैरों के निशान। घसीटने के निशान। जो पहाड़ से नीचे आती हुई धुंध में गायब हो रहे थे।
कबीर का चेहरा सख्त हो गया, "वह चला गया।" उसने कहा, "अब वह शोक नहीं मना सकता था। स्लेज पर बैठो।"
कबीर ने एक स्लेज ली, तारा और अनन्या ने दूसरी स्लेज ली।
कबीर ने इंजन की रफ्तार बढ़ाते हुए कहा, "मेरे पीछे आओ। और पीछे मुड़कर मत देखना।"
वे बर्फीले बंजर इलाके में तेजी से आगे बढ़े।
उनके पीछे धंकर पर्वत धीरे-धीरे लुप्त होता जा रहा था। केसरिया रंग का कोहरा ज्वालामुखी विस्फोट की तरह ढलानों से नीचे उतर रहा था और अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को निगल रहा था।
और घने कोहरे के भीतर, विशालकाय आकृतियाँ बन रही थीं। कोहरे और सन्नाटे से बने दैत्य, घाटी की तलहटी में कदम रखते हुए, उनके सिर तूफानी बादलों को छू रहे थे।

अध्याय 11: सफेद सड़क

बर्फ़ीले तूफान में गति एक सापेक्ष अवधारणा है। 80 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार पर, स्नोमोबाइल बादलों के बीच से गुजरती हुई मिसाइल की तरह महसूस हो रही थी।

कबीर ने हैंडल को कसकर पकड़ लिया, उसके दस्ताने रबर की ग्रिपों से जम गए थे। हेडलाइट ने सफेद अंधेरे में पीले रंग की एक किरण बिखेरी, लेकिन यह काफी नहीं था। सड़क बर्फ की एक खतरनाक पट्टी थी, जो स्पीति नदी की घाटी के किनारे-किनारे घुमावदार थी।

उनके पीछे दुनिया बिखर रही थी।

केसरिया कोहरा महज़ बह नहीं रहा था; वह शिकार कर रहा था। वह घाटी की तलहटी में एक जीवंत ज्वार की लहर की तरह उमड़ रहा था, एक अस्वस्थ, जैविक रूप से चमकते नारंगी रंग से जगमगा रहा था। कोहरे के भीतर आकृतियाँ हिल रही थीं—लंबी, कई अंगों वाली परछाइयाँ जो हवा को झपटने की कोशिश कर रही थीं।

"तेज़ चलो!" तारा ने दूसरी स्लेज से चीख मारी, इंजन की तेज़ आवाज़ में उसकी आवाज़ मुश्किल से सुनाई दे रही थी। अनन्या उसकी कमर से चिपकी हुई थी, उसका अंधा चेहरा पीछा करते तूफ़ान की ओर मुड़ा हुआ था।

कबीर ने चिल्लाकर जवाब दिया, "मुझे मोड़ दिखाई नहीं दे रहा है!"

"बाएं मुड़ो!" अनन्या अचानक चिल्लाई, उसकी आवाज हवा में गूंज उठी। "अभी!"

कबीर ने उससे कोई सवाल नहीं किया। उसने अचानक हैंडल को बाईं ओर मोड़ दिया।

स्लेज फिसल गई, उसका ट्रैक बर्फ में धंस गया और वह नुकीली चट्टान से कुछ इंच की दूरी से बच गई। अनन्या, अपनी दृष्टिहीनता के बावजूद, शून्य की आवृत्ति के माध्यम से भूभाग को देख रही थी।

चीख!

दाहिनी ओर से धातु के फटने जैसी आवाज आई।

कबीर ने बगल में देखा। धूसर धुंध का एक विशाल तंबू खाई से बाहर निकला और उन्हें रोकने की कोशिश कर रहा था। वह चट्टान से टकराया और बड़े-बड़े पत्थरों को चूर-चूर कर दिया।

"वे हमें घेरने की कोशिश कर रहे हैं!" तारा चिल्लाई। "उन्हें पता है कि हम की जा रहे हैं!"

"कितनी दूर?" कबीर दहाड़ा।
"पांच किलोमीटर! बस झूलते पुल को पार करो!"
पुल। कबीर का दिल बैठ गया। स्पीति नदी पर बना वह झूलता हुआ पुल पुराना, हिलता-डुलता और संकरा था।
वे अंतिम मोड़ पर पहुँच गए। गाड़ियों की हेडलाइट्स में पुल दिखाई देने लगा।
इसे ब्लॉक कर दिया गया था।
एक विशालकाय याक, जो पूरी तरह से जम गया था और उसी स्पंदित नमक के क्रिस्टल से ढका हुआ था जो तारा के हाथ पर थे, पुल के बीच में खड़ा था।
"इसे चलाओ!" कबीर चिल्लाया। "रुको मत!"
"यह बहुत बड़ा है!" तारा चिल्लाई।
"अगर हम रुक गए तो कोहरा हमें बहा ले जाएगा!" कबीर ने इंजन को पूरी रफ्तार से दौड़ाया। "स्लेज को उछालो!"
उसने पूरी रफ्तार से पुल के रैंप पर टक्कर मारी। स्नोमोबाइल हवा में उछल गई।
कबीर कूद गया। उसने खुद को एक तरफ फेंका, पुल के बर्फीले तख्तों से टकराया और लुढ़क गया।
खाली स्लेज हवा में उड़ती हुई गई और तोप के गोले की ताकत से जमे हुए याक से टकरा गई।
टकरा जाना।
याक चकनाचूर हो गया। वह मांस और हड्डियों का ढांचा नहीं था; वह खोखला था, नमक और बर्फ से भरा हुआ। वह सफेद धूल के बादल में तब्दील होकर बिखर गया। स्लेज पुल के किनारे से लुढ़कती हुई नीचे गहरी खाई में जा गिरी।
कबीर बर्फ पर फिसलते हुए अपने पैरों पर खड़ा हुआ। वह मुड़ा।
तारा की स्लेज उससे कुछ ही फीट की दूरी पर फिसलती हुई रुक गई। वह और अनन्या स्लेज से गिर पड़ीं।
"हटो!" कबीर ने अनन्या को पकड़ लिया। "भागो!"
वे हिलते-डुलते पुल को पार कर दौड़ पड़े। हवा तारों के बीच से ज़ोर से बह रही थी।

उनके पीछे, केसरिया रंग का कोहरा पुल के प्रवेश द्वार पर आ गिरा।
यह पार नहीं हुआ। यह रुक गया।
कोहरा पुल के आरंभिक भाग पर ऐसे जमा हो गया जैसे बांध से पानी टकराता है। अंदर की परछाइयाँ चहचहाती हुई इधर-उधर घूम रही थीं, लेकिन वे लकड़ी पर कदम नहीं रख रही थीं।
"बहता पानी," तारा हांफते हुए रेलिंग के सहारे गिर पड़ी। "नीचे नदी बह रही है। यह बहता पानी है। वे बहते पानी को पार नहीं कर सकते। यह उनकी आवृत्ति को स्थिर कर देता है।"
कबीर ने नीचे देखा। स्पीति नदी जगह-जगह जमी हुई थी, लेकिन बीच में काला पानी उग्र रूप से उबल रहा था।
कबीर ने अपनी घड़ी देखते हुए कहा, "इससे हमें समय मिल जाता है।" रात के 2 बज रहे थे।
"लेकिन भोर से पहले नदी पूरी तरह जम जाती है। एक बार बर्फ का पुल बन जाए तो..."
"फिर वे पार करते हैं," अनन्या ने बात पूरी की। "और काई गिर जाता है।"
कबीर ने सामने पहाड़ की ओर देखा। एक शंकु के आकार की पहाड़ी पर, किसी काल्पनिक उपन्यास के किले की तरह, क्ये गोम्पा स्थित था। उसकी सफेदी की हुई दीवारें और लाल छतें हरे-भरे, आयनित आकाश के बीच शान से खड़ी थीं।
मठ की खिड़कियों में रोशनी टिमटिमा रही थी। बिजली की रोशनी नहीं, बल्कि मशालें।
अनन्या ने कहा, "वे हमारा इंतजार कर रहे हैं। मुझे मंत्रोच्चार की आवाज सुनाई दे रही है।"

अध्याय 12: हड्डियों का किला

क्ये मठ एक हजार वर्षों में एक के ऊपर एक बनी हुई कमरों और गलियारों की भूलभुलैया है। यह शांति का स्थान है। आज रात, यह एक युद्ध कक्ष था।

कबीर, तारा और अनन्या आधे जमे हुए और थके हुए मुख्य द्वार से लड़खड़ाते हुए अंदर आए। उनका सामना शांत भिक्षुओं से नहीं, बल्कि भारी मैरून वस्त्र पहने हुए और हथियार लिए हुए पुरुषों से हुआ—जिनमें प्राचीन बंदूकें, भाले और भारी लोहे की जंजीरें शामिल थीं।

"उन्हें जाने दो!" एक आवाज ने आदेश दिया।

एक छोटे कद के, बुजुर्ग भिक्षु पत्थर की सीढ़ियों से नीचे उतरे। उन्होंने चश्मा पहना हुआ था और उनके हाथ में प्रार्थना की माला थी जो अंधेरे में हल्की चमक रही थी। ये रिनपोचे तेनज़िन थे।

"हमने कोहरा देखा," तेनज़िन ने आकाश की ओर देखते हुए कहा। "बुनकर ने करघा तोड़ दिया है।"

कबीर ने लड़खड़ाती आवाज में कहा, "हमने इसे खोला। हमने धंकर में कैपेसिटर की सारी बैटरी निकाल दी। हमें लगा कि यह एम्पलीफायर की समस्या है।"

"एक जाल," तेनज़िन ने उदास होकर सिर हिलाया। "बुनकर एक धोखेबाज है। धंकर में लगी मशीन एक प्लग की तरह थी, जो दबाव को नियंत्रित रखती थी। अब, बांध टूट गया है।"

उसने तारा की ओर देखा। उसने तारा का हाथ देखा, जो अब कोहनी तक पूरी तरह से नमक के क्रिस्टलों से ढका हुआ था।

"तुम पर निशान लग गया है," तेनज़िन ने धीरे से कहा। वह पीछे नहीं हटा। उसने उसका क्रिस्टलीकृत हाथ अपने हाथ में ले लिया। "नमक कार्बन की जगह ले रहा है। तुम एक ग्रहणकर्ता बन रही हो।"

"क्या तुम इसे रोक सकते हो?" तारा ने कांपती हुई आवाज में पूछा।

"नहीं," तेनज़िन ने कहा। "लेकिन हम इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। आइए। विधानसभा भवन तैयार है।"

वे रिनपोचे के पीछे-पीछे मठ के भीतर तक चले गए। वहाँ का वातावरण घी के दीयों और अगरबत्ती की सुगंध से भरा हुआ था।

सभा भवन—दु-खांग—खचाखच भरा हुआ था। सैकड़ों भिक्षु पंक्तियों में बैठे थे और धीमी, गहरी स्वर-सा ध्वनि में भजन गा रहे थे। कंपन तीव्र था; कबीर इसे अपने सीने में महसूस कर सकते थे।

कमरे के बीचोंबीच एक बड़ा ढोल था, जो फीकी चमड़ी से ढका हुआ था। और उसके बगल में एक चांदी का तुरही था—एक कांगलिंग।

कबीर ने पूछा, "योजना क्या है? हमारे पास बंदूकें तो हैं, लेकिन ये इन चीजों पर काम नहीं करतीं।"

"बुनकर ध्वनि है," तेनज़िन ने कहा। "पदार्थ मात्र ध्वनि का ही रूप है। यदि बुनकर अराजकता की आवृत्ति लाता है, तो हमें व्यवस्था की आवृत्ति से उसका सामना करना होगा। ओम।"

कबीर ने संदेह से पूछा, "एक मंत्रोच्चार? क्या तुम उन्हें गा-गाकर मार डालना चाहते हो?"

"यह कोई गाना नहीं है, इंस्पेक्टर," तेनज़िन ने कठोर आँखों से कहा। "यह एक प्रति-अनुनाद है। हमारा इरादा एक ध्वनि अवरोध बनाने का है जो शून्य को पीछे धकेल देगा। लेकिन..."

"क्या पर?"

"इसे पीछे धकेलने के लिए, हमें एक सहारे की जरूरत है। कोई ऐसा व्यक्ति जो दोनों दुनियाओं में मौजूद हो। कोई ऐसा व्यक्ति जो दरवाजे पर खड़ा होकर उसे खुला रख सके जबकि हम उसे धकेलते रहें।"

तेनज़िन ने अनन्या की ओर देखा।

तेनज़िन ने कहा, "अंधे वो देख लेते हैं जो हम नहीं देख सकते। वह टैंक में रह चुकी है। उसने पानी का स्वाद चखा है।"

"नहीं," कबीर अनन्या के सामने आ गया। "मैंने उसे अभी-अभी वापस पाया है। तुम उसे मानव ढाल की तरह इस्तेमाल नहीं कर सकते।"

अनन्या ने धीरे से कहा, "यह वह नहीं है।" वह कबीर के पीछे से बाहर निकली। "यह तारा है।"

कमरा एकदम शांत हो गया।

"मैं?" तारा ने अपनी क्रिस्टलीकृत बांह ऊपर उठाई।

"अनन्या नक्शा है," तेनज़िन ने कहा। "लेकिन तुम, तारा... तुम रेडियो हो। तुम्हारे रक्त में मौजूद नमक तुम्हें सुचालक बनाता है। तुम्हें कांगलिंग की ध्वनि बजानी होगी।"
उसने चांदी के तुरही की ओर इशारा किया।
"आपको ठीक उसी क्षण तुरही बजानी होगी जब कोहरा दीवारों को भेदता हुआ प्रवेश करे। यदि आप इसे व्यवस्था बनाए रखने के इरादे से बजाते हैं, तो आपके भीतर का नमक प्रतिध्वनित होगा। यह मंत्र को हजार गुना बढ़ा देगा।"
"और मेरा क्या होगा?" तारा ने पूछा।
तेनज़िन हिचकिचाया। "कंपन... इससे नमक चूर-चूर हो जाएगा। और उससे जुड़ी हर चीज़ भी।"
तारा ने अपनी बांह की ओर देखा। अगर उसने ऐसा किया, तो उसकी बांह—और संभवतः उसका शरीर—ध्वनि के दबाव से नष्ट हो जाएगा।
"मैं कर दूंगी," तारा ने कहा।
"तारा, नहीं," कबीर ने उसका सही कंधा पकड़ लिया।
"कबीर, मेरी तरफ देखो!" तारा चिल्लाई। उसने अपनी आस्तीन ऊपर चढ़ा ली। अब क्रिस्टल उसके कंधे पर थे। "मैं तो वैसे भी मर चुकी हूँ! मैं मूर्ति बन रही हूँ! कम से कम मुझे टूटने पर निकलने वाली आवाज़ तो चुनने दो।"
बूम।
मठ के भारी लकड़ी के दरवाजे हिल गए।
"वे यहाँ हैं," तेनज़िन ने कहा। "नदी जम गई है।"
कबीर ने अपनी राइफल जाँची। उसमें एक ही मैगज़ीन बची थी। उसने अपना शिकार करने वाला चाकू निकाला।
कबीर ने पूछा, "आपको कितना समय चाहिए?"
"ऊर्जा बढ़ाने के लिए दस मिनट तक लगातार मंत्रोच्चार करना होगा," तेनज़िन ने कहा।
“तो तुम जप करो,” कबीर दरवाजे की ओर चल पड़ा। “मैं तुम्हें दस मिनट का समय देता हूँ।”

अध्याय 13: घेराबंदी

की मठ का प्रांगण एक वधस्थल था।

कबीर सीढ़ियों के सबसे ऊपर अकेले खड़े थे, हवा उनके कोट को फड़फड़ा रही थी। उनके पीछे, सभा भवन के दरवाजे बंद थे। अंदर, मंत्रोच्चार की धीमी गूंज उठने लगी। ओम्म्म्म...

नीचे, द्वार अचानक खुल गया।

घना कोहरा छा गया। और उसके साथ ही मृतकों की सेना भी आ गई।

वे अब महज परछाइयाँ नहीं रह गए थे। बुनकर ने उन्हें आकार दे दिया था। वे बर्फ, चट्टान और केसरिया लताओं से बनी आकृतियाँ थीं। वे पुरुषों की विकृत नकल की तरह दिखते थे—अंग बहुत लंबे, जबड़े बेमेल।

"चलो!" कबीर दहाड़ा।

उसने गोली चला दी।

उसने शरीरों को निशाना नहीं बनाया; उसने जोड़ों को निशाना बनाया। घुटनों को। गर्दन को।

बैंग बैंग!

सबसे आगे चल रहा विशालकाय जीव, जो जमी हुई मिट्टी का बना था, घुटने में चोट लगने से चकनाचूर हो गया। वह गिर पड़ा और बाकी जीवों का रास्ता रोक दिया।

"सात मिनट!" अनन्या की आवाज़ एक ऊँची खिड़की से सुनाई दी।

एक प्राणी मकड़ी की तरह रेंगता हुआ दीवार पर कूद पड़ा। उसने पुलिस की वर्दी के फटे-पुराने टुकड़े पहन रखे थे।

"नेगी?" कबीर ने फुसफुसाते हुए कहा।

नेगी जैसी दिखने वाली चीज चीखी और झपटी।

कबीर ने राइफल को नीचे गिरा दिया—उसमें गोलियां खत्म हो गई थीं—और भिक्षुओं द्वारा छोड़ी गई भारी लोहे की जंजीर को घुमाया।

जंजीर हवा में ही उस प्राणी से टकराई और उसकी पसलियों को चकनाचूर कर दिया। वह नमक की धूल में तब्दील हो गया, जिससे कबीर एक पल के लिए अंधा हो गया।

उसने अपनी आँखें पोंछीं। वे सीढ़ियों पर उमड़ पड़े थे। बहुत ज़्यादा थे वे।

"पाँच मिनट!"

कबीर धीरे-धीरे पीछे हटता गया, चेन घुमाता हुआ और चाकू का इस्तेमाल करता हुआ। उसके माथे पर गहरे घाव से खून बह रहा था। ठंड उसकी हड्डियों तक जम रही थी।
अचानक, वायु दाब कम हो गया। हॉल के अंदर हो रहा मंत्रोच्चार अचानक रुक गया।
कबीर मुड़ा।
विधानसभा भवन की छत पर बुनकर खड़ा था।
अब यह पूरी तरह से भव्य था। बीस फुट ऊँचा, केसरिया लताओं और भूरे रंग के मांस से बना एक अवतार। इसकी आँखें नहीं थीं, केवल एक मुँह था जो इसके धड़ पर लंबवत नीचे की ओर फैला हुआ था।
उसने अपना मुंह खोला।
कोई आवाज़ नहीं निकली। इसके बजाय, सन्नाटा छा गया।
खामोशी एक शारीरिक बल की तरह थी। इसने कबीर को हथौड़े की तरह चोट पहुंचाई। वह घुटनों के बल गिर पड़ा और अपने कान पकड़ लिए। उसकी नसों में बहता खून मानो उबल रहा था।
बुनकर ने हॉल की ओर इशारा करते हुए हाथ उठाया। यह इमारत को कुचल देगा और उस मंत्रोच्चार को हमेशा के लिए शांत कर देगा।
"अब, तारा!" कबीर चिल्लाया, हालाँकि उसे अपनी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी।
"अब!"

अध्याय 14: केसर का स्वाद

हॉल के अंदर, तारा दोरजे ढोल के पास खड़ी थी। बाहर की खामोशी दीवारों पर दबाव डाल रही थी, जिससे पत्थर में दरारें पड़ रही थीं।

उसने चांदी की कांगलिंग उठाई। उसका दाहिना हाथ पूरी तरह अकड़ा हुआ था, मानो नमक की मूर्ति हो। उसे उसमें कोई एहसास नहीं हो रहा था, लेकिन वह उसे अपने मन से हिला सकती थी।

उसने तुरही को अपने होठों से लगाया।

उसने अनन्या की ओर देखा, जो चुपचाप रो रही थी। उसने भिक्षुओं की ओर देखा, जो ध्वनि के सन्नाटे में सांस लेने के लिए संघर्ष कर रहे थे।

तारा ने अपनी आँखें बंद कर लीं। उसने अपने दादाजी के बारे में सोचा। उसने हड्डियों के पुस्तकालय के बारे में सोचा। उसने सड़क पर जमी हुई भेड़ों के बारे में सोचा।

उसने हवा नहीं फूँकी। उसने अपनी पूरी जीवन शक्ति सींग में झोंक दी।

ब्लाआआआआर्ट।

तुरही से निकली ध्वनि इस दुनिया की नहीं थी। वह शुद्ध, निर्मल प्रतिध्वनि थी।

तारा की बांह में लगा नमक चकाचौंध कर देने वाली सफेद रोशनी से चमकने लगा। कंपन उसकी गर्दन से होते हुए खोपड़ी तक पहुंच गया। वह चीखी, लेकिन उसकी चीख संगीत की धुन में घुल गई।

ध्वनि तरंग दीवारों से टकराई।

बाहर, बुनकर की खामोशी तुरही की आवाज से मिल गई।

दरार।

आकाश फट गया।

हरी आभा बिखर गई।

वीवर चीख उठा—वास्तविक दर्द की आवाज़। ध्वनि तरंग उसके शरीर से टकराई। लताएँ टूट गईं। धूसर मांसल शरीर में लहरें उठीं और टुकड़े-टुकड़े हो गया।

"धक्का दो!" तेनज़िन ने भिक्षुओं से दहाड़ लगाई। "मंत्रोच्चार करो!"

भिक्षुओं ने अपनी सांसें संभालीं। उन्होंने एक साथ मंत्र का जाप किया।

तुरही और मंत्रोच्चार की संयुक्त शक्ति ने एक तीव्र तरंग उत्पन्न की। यह मठ से बाहर की ओर फैल गई, शुद्ध सफेद शक्ति का एक घेरा बन गई।
इसका असर मृतकों की सेना पर पड़ा। वे पल भर में भाप बनकर उड़ गए।
यह केसरिया धुंध से टकराया। धुंध छंट गई और हानिरहित भाप में बदल गई।
यह वीवर से टकराया।
वह प्राणी कबीर की ओर नीचे देखने लगा, उसका रूप अस्थिर हो गया। उसने आखिरी बार हाथ बढ़ाया, उसे पकड़ने की कोशिश की।
फिर, तारा के शरीर में नमक की मात्रा खतरनाक स्तर पर पहुंच गई।
हॉल के अंदर, सूर्य से भी तेज रोशनी की एक चमक दिखाई दी।

अध्याय 15: बर्फ पिघलना

तीन दिन बाद।

स्पीति घाटी पर सूरज की रोशनी पड़ रही थी। यह एक सामान्य सूरज था। पीला। गर्म।

बर्फ पिघल रही थी। सड़कें कीचड़ भरी थीं लेकिन उन पर आवागमन संभव था।

कबीर की मठ की सीढ़ियों पर बैठे थे। उनके हाथ में पट्टी बंधी थी। वे सिगरेट पीते हुए नीचे घाटी में भारतीय सेना के ट्रकों को आते हुए देख रहे थे।

"राहत स्तंभ," रिनपोचे तेनज़िन ने उनके बगल में बैठते हुए कहा। "भोजन, दवा और प्रश्न।"

कबीर ने कहा, "पहले दो सवालों के जवाब मेरे पास हैं। तीसरे के लिए... मैं झूठ बोलूंगा।"

"एक समझदारी भरा विकल्प।"

कबीर ने आंगन के कोने में जमा हुई केसरिया धूल के ढेर को देखा। हवा धीरे-धीरे उसे उड़ा ले जा रही थी।

"वह कैसी है?" कबीर ने पूछा।

"अनन्या ठीक हो जाएगी," तेनज़िन ने कहा। "उसकी आँखों की रोशनी तो वापस नहीं आएगी, लेकिन अब उसे सब कुछ साफ़ दिखाई देता है। उसने यहीं रहने का फैसला किया है। वह पुस्तकालय का लेखा-जोखा तैयार करेगी।"

और तारा?

तेनज़िन चुप रहा। उसने अपने वस्त्र में हाथ डाला और एक छोटी सी वस्तु निकाली।

यह क्रिस्टल का एक टुकड़ा था। नमक। बिल्कुल मानव उंगली की हड्डी के आकार का।

"हमें हॉल में सिर्फ धूल मिली," तेनज़िन ने कहा। "और यह। इंस्पेक्टर साहब, वह फ्रीक्वेंसी बन गई। वह मरी नहीं। उसने बस... स्टेशन बदल दिया।"

कबीर ने क्रिस्टल उठाया। छूने पर वह गर्म था।

कबीर ने कहा, "उसने हमें बचाया।"

"उसने दरवाजा बंद कर दिया," तेनज़िन ने बात सुधारते हुए कहा। "लेकिन दरवाजे फिर से खुल जाते हैं। खामोशी के नीचे, केसरिया शून्य अभी भी मौजूद है।"

कबीर खड़ा हो गया। उसने क्रिस्टल को अपनी जेब में रख लिया।

"तो फिर मुझे लगता है कि मैं दिल्ली वापस ट्रांसफर नहीं ले रहा हूँ," कबीर ने कहा।

"नहीं?"

"नहीं," कबीर ने हिमालय की विशाल, निर्मल सुंदरता की ओर देखते हुए कहा। "किसी को तो बैरोमीटर पर नज़र रखनी ही होगी।"

वह सीढ़ियों से उतरकर इंतज़ार कर रहे सेना के ट्रकों की ओर बढ़ा। घाटी में सन्नाटा पसरा हुआ था। लेकिन लंबे समय बाद, यह सन्नाटा डरावना नहीं था। यह बस शांति थी।

उसके नीचे स्पीति नदी बह रही थी—तरल, प्रचंड और जीवंत।

***** **समाप्त** *****

---

sjeet